अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 4 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 अक्टूबर 2021 ✦ वर्ष 10 ✦ कुल पृष्ठ 44 ✦ मूल्य ₹5

शुभ दीपावली

भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव पर
दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं

स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

(19 अगस्त 1927 – 31 अगस्त 2016)

जैन समाज के लिये आपका योगदान एवं समाज को एक सूत्र में बांधे रखने का अन्तिम सन्देश सदैव स्मरणीय रहेगा।

आपका प्रेरणामय जीवन हमारे लिए सदैव पथ प्रदर्शक रहेगा।

MARSON'S

ISO 9001:2000 CERTIFIED COMPANY

समस्त परिवारीजन
स्टाफ एवं कर्मचारीगण

MARSON'S ELECTRICAL INDUSTRIES

(Prop. MEI Power Pvt. Ltd.)

www.marsonselectricals.com • E-mail : info@marsonselectricals.com
1/189, Delhi Gate, Civil Lines, Agra-282002 (India)
Ph : +91-562-2520027, 2850812 • Fax : +91-562-2851306

Works :

Mathura Road, Artoni, Agra - 282007 (India)
Ph : +91-2641448, 2642327-28 • Fax : +91-562-2641435

TRANSFORMERS EXPORTED TO OVER 15 COUNTRIES

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

मूल्य ₹ 5/-

अंक 4 ✦ 25 अक्टूबर 2021 ✦ वर्ष 10

Email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com

कुल पृष्ठ : 44

पूर्व प्रकाशन मथुरा से, सम्प्रति जयपुर से प्रकाशित

महासभा पदाधिकारी

श्री आर.सी. जैन *(अध्यक्ष)*
(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)
एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर (राज.)-302018
मोबा. : 9414279070, 9829999335
E-mail : rcjainras@gmail.com

श्री राजीव रतन जैन *(महामंत्री)*
301-ए, सुख सागर अपार्टमेन्ट, 4, जानकी नगर मेन,
इन्दौर (म.प्र.)-452001, मोबा.: 9425110204
E-mail : jainrajeevratan@gmail.com

श्री अजीत जैन *(अर्थमंत्री)*
1द39, काला कुंआ हा.बोर्ड, अलवर (राज.)-301002
फोन : 0144-2360115, मोबा.: 9413272178
E-mail : akjain2021@yahoo.in

पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

डॉ. अनुपम जैन *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

श्री प्रकाश चन्द जैन *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार ''बी''
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

श्री पारस जैन गहनौली *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

श्री महेश चन्द जैन *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

संयोजक की कलम से....

भगवान महावीर

भगवान महावीर ने अहिंसा, तक, संयम, पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ती, अनेकान्त, अपरिग्रह एवं आत्मवाद का संदेश दिया। महावीर स्वामी जी ने यज्ञ के नाम पर होने वाली पशु-पक्षी तथा नर की बलि का पूर्ण रूप से विरोध किया तथा सभी जाति और धर्म के लोगों को धर्म पालन का अधिकार बतलाया। महावीर स्वामी जी ने उस समय जाति-पाती और लिंग भेद को मिटाने के लिए उपदेश दिये। कार्तिक मास की अमावस्या को रात्रि के समय महावीर स्वामी निर्वाण को प्राप्त हुये, निर्वाण के समय भगवान महावीर स्वामी जी की आयु 72 वर्ष की थी।

भगवान महावीर के जिओ और जीने दो के सिद्धान्त को जन-जन पहुंचाने के लिए जैन धर्म के अनुयायी हर वर्ष की कार्तिक पूर्णिमा को त्यौहार की तरह मनाते हैं। इस अवसर पर वह दीपक प्रज्ज्वलित करते हैं। जैन धर्म के अनुयायियों के लिए उन्होनें पांच व्रत दिए जिसमें अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह बताया गया। अपनी सभी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेने की वजह से वे जितेन्द्रिय या 'जिन' कहलाए। जिन से ही जैन धर्म को अपना नाम मिला। जैन धर्म के गुरूओं के अनुसार भगवान महावीर के कुल 11 गणधर थे, जिनमें गौतम स्वामी पहले गणधर थे। भगवान महावीर ने 527 ईसा पूर्व कार्तिक कृष्णा द्वितीया तिथि को अपनी देह त्याग दी। बिहार के पावापुरी जहां उन्होने अपनी देह को छोड़ा, जैन अनुयायियों के लिए यह पवित्र स्थल की तरह पूजित किया जाता है। भगवान महावीर की मृत्यु के दो सौ साल बाद जैन धर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदायों में बंट गया।

भगवान महावीर जी की शिक्षाएं : भगवान महावीर द्वारा दिए गए पंचशील सिद्धान्त ही जैन धर्म का आधार बने हैं। इस सिद्धान्त को अपना कर ही एक अनुयायी सच्चा जैन अनुयायी बन सकता है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पंचशील कहा जाता है।

सत्य : भगवान महावीर के अनुसार एक बेहतर इंसान बनने के लिए जरूरी है कि हर परिस्थिति में सच बोला जाए।

अहिंसा : दूसरों के प्रति हिंसा की भावना नहीं रखनी चाहिए। जितना हम खुद से प्रेम करते हैं उतना ही प्रेम दूसरों से भी करें। अहिंसा का पालन करें।

अस्तेय : दूसरों की वस्तुओं को चुराना और दूसरों की इच्छा करना महापाप है। जो मिला है उसमें ही संतुष्ट रहें।

ब्रह्मचर्य : महावीर जी के अनुसार जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन करना सबसे कठिन है, जो भी मनुष्य इसको अपने जीवन में स्थान देता है, वो मोक्ष प्राप्त करता है।

अपरिग्रह : ये दुनिया नश्वर है। चीजों के प्रति मोह ही आपके दुःखों का कारण है। सच्चे इंसान किसी भी सांसारिक चीज का मोह नहीं करते है।

इस वर्ष 4 नवंबर 2021 को भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव मनाया जाएगा। इस अवसर पर जैन धर्मावली मंदिरों में विशेष पूजा अर्चना करते हैं एवं प्रातः बेला में भगवान की मूर्ति पर लड्डू चढ़ाया जाता है। इसी उपलक्ष में दीपावली का त्यौहार भी मनाया जाता है।

आपका चन्द्रशेखर जैन

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
यह लेखकों के निजी विचार माने जाने चाहिये।

भावभीनी श्रृद्धांजलि

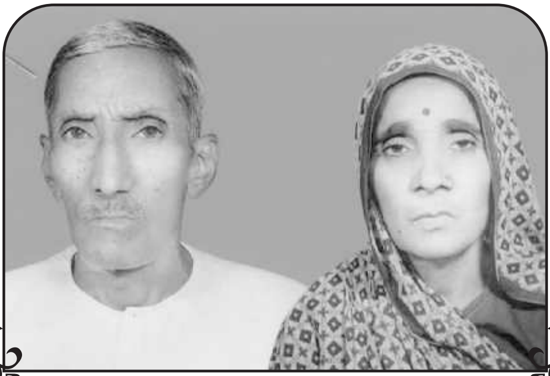

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)
(स्वर्गवास : 30.12.2018)

हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र :
पदम चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
पारस जैन-रश्मि जैन,
पौत्री-दामाद :
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी
पड़पोत्री-पौत्र :
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

पुत्र :
अनूप चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त जैन-मधु जैन
पौत्री-दामाद :
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप
पड़पौत्र :
रोबीन-मानस

निवास :
बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

ढोंग का नहीं, ढंग का जीवन जिएं

''मनुष्य झूठ में जी रहा है। पत्नी अपनी नहीं है जबकि वह अपना मान रहा है। बच्चे अपने नहीं हैं जबकि वह उन्हें अपना मानता है। धन दौलत साथ जाने वाली नहीं फिर भी उसके पीछे हाथ धोकर पड़ा है। शरीर अपना नहीं है तब भी उसकी सेवा में अहर्निश संलग्न है। मनुष्य की जिन्दगी सिवाय झूठ के और है क्या? मित्रों! हमें यथार्थ से जुड़ना है। यथार्थ का जीवन जीना है ताकि आनंद का जीवन जी सकें और जीवन का आनंद ले सकें। दिखावे और प्रदर्शन से क्या होगा? जो सत्य है केवल वही अपना है, शेष सब सपना है।''

मनुष्य दोहरा जीवन जी रहा है। मनुष्य के विचार में और व्यवहार में कोई सामंजस्य नहीं है। वह जो सोचता है वह बोलता नहीं है और जो बोलता है वह करता नहीं है। मनसा, वाचा, कर्मणा वह बहुरूप है। मनुष्य की जिन्दगी बहुरूपिये की जिन्दगी बन गई है। मनुष्य के मन और मुख में समरसता नहीं दिखती। मनुष्य की जीभ और जीवन में छत्तीस का आंकड़ा है, इसीलिए वह दुःखी और क्लांत है। वह ढंग का नहीं, ढोंग का जीवन जी रहा है। आत्मदर्शन का नहीं, प्रदर्शन का जीवन जीने का आदी है।

मनुष्य की जीभ जो बोलती है जीवन उसके विरुद्ध होता है। जीभ गाती है एकता के गीत, जो जीवन अपना अलग और बे-स्वरा आलाप भरता है। जीभ पर शहद-सी मिठास है तो जीवन में कड़वाहट व्याप्त है। जीभ पर राम-नाम है तो जीवन रावण के कारनामों का पर्याय बना हुआ है। जीभ पर वसुधैव कुटुम्बकम की उदात्त-भावना के भाषण हैं तो जीवन में 'हम दो हमारे दो' की कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं। जीभ पर आदर्श है तो जीवन में संघर्ष है।

जीभ और जीवन में गहरी विसंगतियां हैं, गहरी खाइयां हैं जिनको पाटना जरूरी ही नहीं, परम अनिवार्य भी है। महावीर स्वामी कहते हैं- जब तक जीभ और जीवन के बीच का फासला समाप्त नहीं होगा तब तक जीवन वृक्ष पर सौन्दर्य के फूल और सत्य के फल नहीं लग सकते। जीभ और जीवन की समरसता परमधन्यता है। मन और मुख की एकरूपता जीवन की परम उपलब्धि है।

आदर्श महज जीभ तक नहीं जीवन में भी प्रतिबिम्बित होना चाहिए, कारण कि जब जीभ बोलती है तो उसकी आवाज सिर्फ कानों तक पहुंचती है किन्तु जब जीवन बोलने लगता है तो उसकी आवाज कानों को भी पार करके हृदय तक पहुंच जाती है। जीभ की आवाज मर्यादित और क्षणिक होती है जबकि जीवन की आवाज असीम और शाश्वत होती है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर जीभ से नहीं, जीवन से बोलते थे। इसलिए उनकी आवाज आज भी जीवित और प्रतिध्वनित है। जीवन की आवाज चिरंजीवी होती है। पंडित जीभ से बोलता है इसलिए उसकी बातों का श्रोताओं पर कोई खास असर नहीं पड़ता है। लेकिन संत जीवन से बोलते हैं इसलिए उनके उपदेशों से समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन आता है।

जीभ और जीवन का अंतर आत्मोन्नति की दिशा में गत्यावरोधक है। इसे अविलम्ब तोड़ा जाना चाहिए और आदर्श के अनुरूप जीवन जीने का संकल्प लिया जाना चाहिए। जब तक आदर्श के अनुरूप जीवन नहीं जीते तब तक जीवन के आदर्शों का औचित्य उस चित्रित पुष्प सा है जिसमें सुगंध नहीं होती। जो जीवन अनंत आनंद का कोष है, आज वह पीड़ा का महासागर बन चुका है। क्यों? क्योंकि मनुष्य भौतिकता व विलासिता के संसाधनों में आपादकण्ठ निमग्न है। उसके पास है कुछ नहीं, लेकिन ढोंग कर रहा है कि उसके पास सब कुछ है।

मनुष्य जिसे पाने के लिए पैदा होता है उसे पा नहीं पाता है। जिसे जानने के लिए पैदा होता है उसे जान नहीं पाता है, अनजाने ही मर जाता है। बिरले ही लोग होते हैं जिनके जीवन में सौन्दर्य के फूल खिलते हैं और सत्य की सुगंध फैलती है।

यों तो मनुष्य को सब कुछ आता है, अगर नहीं आता है तो सिर्फ जीना! जीने के अलावा मनुष्य को शेष सब कुछ आता है। जीता है लेकिन घसीट-घसीट कर! जिसे आप जीवन कहते हैं वह एक मूर्छा है, एक निद्रा है, दुःख की एक अंतहीन कथा है, व्यथा-कथा है, एक अर्थहीन खालीपन है, एक बोझ है, एक भार है, इसके अलावा कुछ नहीं। जीवन के नाम पर एक तमाशा है, एक नाटक है, एक अभिनय है क्योंकि जीवन में कोई आनंद नहीं है, उमंग नहीं है, रस नहीं है, बहार नहीं है, मधुमास नहीं है, बसंत नहीं है।

मनुष्य जी नहीं रहा है, केवल जीने का अभिनय कर रहा है। जीवन भर अभिनय करता है और अभिनय करते-करते अभिनेता तो बन जाता है किन्तु जीवन-सत्य को उपलब्ध नहीं हो पाता। याद रखो, जीवन मंदिर में केवल उन्हें ही प्रवेश मिलता है जो सत्य का जीवन जी पाते हैं, जिनकी कथनी और करनी के बीच किसी तरह की खाई नहीं होती है, जिनके आचरण और उच्चारण में कोई विभाजक रेखा नहीं होती है। प्रभु के मंदिर में केवल वे ही प्रविष्ट हो पाते हैं जो अपना अहंकार त्याग चुके होते हैं, जो अहम्मन्यता के भार को अपने सिर से उतार चुके हैं। परमात्म-संपदा को केवल वे ही उपलब्ध हो पाते हैं जो बच्चे की भांति सरल होते हैं, सादगीपूर्ण होते हैं, विनीत होते हैं, सहज होते हैं, निष्कपट होते हैं, श्रद्धापूरित होते हैं। जो अहम् में तने हैं, जिनमें अहंकार की अकड़ है, उनके लिए परमात्म मंदिर के दार सदा के लिए बंद हैं।

लोग कहते हैं परमात्मा असीम है, लेकिन मैं कहता हूँ परमात्मा ही असीम नहीं, मनुष्य का अहंकार भी असीम है। असीम अहंकारही असीम परमात्म-मिलन में बाधक है। अहंकार दुःख है, अहंकार पीड़ा है, अहंकार रोग है, अहंकार नर्क है क्योंकि अहंकार परमात्म के विरोध की दिशा है और परमात्मा का विरोध स्वयं का विरोध है।

अहंकार नरक है। ऐसा मत सोचना कि नरक केवल पाताल में ही है, नरक तुम्हारे भीतर भी है। तुम्हारे गलत जीने का ढंग नरक है। फूलों को छोड़कर कांटों को चुनने की आदत नरक है, जो तुम नहीं हो उसे दिखाना और जो तुम हो उसे छिपाना, इस तरह की विकृत मानसिकता का नाम ही नरक है। जीभ और जीवन का विरोधाभास ही नरक है।

मनुष्य झूठ में जी रहा है। पत्नी अपनी नहीं है जबकि वह अपना मान रहा है। बच्चे अपने नहीं हैं जबकि वह उन्हें अपना मानता है। धन दौलत साथ जाने वाली नहीं फिर भी उसके पीछे हाथ धोकर पड़ा है। शरीर अपना नहीं है भी उसकी सेवा में अहर्निश संलग्न है। मनुष्य की जिन्दगी सिवाय झूठ के और है क्या? मित्रों! हमें यथार्थ से जुड़ना है। यथार्थ का जीवन जीना है ताकि आनंद का जीवन जी सकें और जीवन का आनंद ले सकें। दिखावे और प्रदर्शन से क्या होगा? जो सत्य है केवल वही अपना है, शेष सब सपना है।

आईना साफ होता है तो प्रतिबिम्ब भी साफ होता है। इसी प्रकार जीवन साफ होगा तो जीवन शैली भी साफ-सुथरी व निष्कलंक होगी। जीवन की सच्ची सुषमा निष्कलंक जीवन में है, बाहरी प्रदर्शन, सुसज्जा और वासना-पूर्ति में नहीं। आत्म-नियंत्रण, आत्म-निरीक्षण, आत्म-परीक्षण - ये दोहरा जीवन (ढोंग का जीवन) शैली बदलने के लिए महत्वपूर्ण घटक हैं। इंसान को अपने गिरेबां में झांककर देखना चाहिए कि वह कितना नेक और पाक-साफ है। मनुष्य को अपने आपको आत्म कसौटी पर कसना होगा। अंतःकरण की अदालत मानकर जीना होगा, ढोंग का नहीं, ढंग का जीवन जीना होगा तभी वह दुःखों से मुक्त हो सकता है।

-मुनि तरूणसागर जी

'दुःख से मुक्ति कैसे मिले' से साभार

पल्लीवाल जैन समाज की असहाय निशक्तजन एवं विधवाओं को संभल प्रदान कर रहे समाज के भामाशाह

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा समाज की महिलायें/ असहाय निशक्तजन जोकि किसी कारणवश काल के प्रभाव से या कर्मों के खेल से वैधव्य का कष्ट उठा रही/रहें हैं के लिए करूणा का भाव रखती है तथा समाज में उन सभी को उचित सम्मान मिले इसी भावना को ध्यान में रखते हुऐ करिबन 140 विधवाओं/असहाय निशक्तजन को रु. 1000/- प्रतिमाह सहायता राशि समाज के सहयोग से दी जा रही है।

महासभा के इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर डॉ. अनिल कुमार जैन एवं श्रीमती हेमलता जैन, जयपुर ने रु. 50,000/- महासभा को रसीद सं. 5018 द्वारा प्रदान किए हैं। महासभा उनके इस आत्मीय सहयोग के लिए सदैव आभारी रहेगी।

इसी प्रकार श्री रमेश चन्द जी जैन पंकज जैन, दिल्ली जैन पब्लिक स्कूल, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली द्वारा प्रति माह रु. 11,000/- की सहयोग राशि इस मद में दी जा रही है तथा इस वित्तीय वर्ष में रु. 77,000/- प्रदान की गई है।

अ.भा.प. जैन महासभा आपके इस आत्मीय सहयोग के लिए सदैव आभारी रहेगी एवं बारम्बार अनुमोदना करती है।

-अजीत जैन

अर्थमंत्री, अ.भा.प. जैन महासभा

क्या इच्छाओं की पूर्ति के लिए जिनपूजन-विधानादि करना उचित है?

वास्तव में यह अंतर्मन को झकझोरने वाला सवाल है ये! सच तो यही है कि हम सभी-जीव कहीं न कहीं, किसी न किसी इच्छा को रखकर ही भगवान् की पूजन-विधानादि करते हैं।

वे जीव विरले ही हैं जो 'वन्दे तदगुण लब्धये' की भावना से भगवान की पूजन-विधानादि करते हैं।

हर सांसारिक कार्य को करने से पहले हम भगवान को याद करते हैं, इसलिए नहीं कि हमें उनके प्रति बहुमान है, बल्कि इसलिये कि मेरा कार्य निर्विघ्न पूरा होवे। मतलब हमें अपने भाग्य पर भरोसा नहीं है, इसीलिए तो हम भगवान से अपेक्षा रखते हैं कि वे हमारा कार्य निर्विघ्न पूरा कर देंगें।

विडम्बना तो यह है कि विधानादि करने के बाद यदि मन मुताबिक कार्य हो जाये तो हम यह मानते हैं कि भगवान की कृपा से सब कुछ अच्छे से हो गया, और मन मुताबिक न हो तो एक क्षण में ही हमारा विश्वास, हमारी श्रद्धा डगमगा जाती है, और उसका दोषारोपण भी हम भगवान को ही देते हैं, यह कहकर कि क्या करें भगवान् की मर्जी नहीं थी। जबकि वास्तविकता यह है कि उस कार्य के होने और न होने में तेरा स्वयं का भाग्य (पुण्य-पाप का उदय) ही जिम्मेदार था, अन्य कोई नहीं।

वस्तु स्वरूप की दृष्टि से विचार करें तो ज्ञात होता है कि हमेशा होने योग्य ही होता है- न अच्छा न बुरा, जगत की सारी व्यवस्था पूर्व निश्चित है, उसमें किसी भी प्रकार का फेर-बदल संभव ही नहीं है, तो फिर हम विधानादि करके उसमें बदलाव कैसे ला सकते हैं? अर्थात् विधानादि के द्वारा अपनी इच्छाओं की पूर्ति की वांछा करना हमारा ही अज्ञान है, भ्रम है।

जब एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता नहीं है तो फिर अरिहंत परमात्मा हमारी इच्छाओं की पूर्ति के, अनुकूल-प्रतिकूल संयोगों के कर्ता कैसे हो सकते हैं? ये हमारा ही स्वार्थ है जो हम उन्हें सांसारिक कार्यों में याद करते हैं, जबकि उनका तो इन सांसारिक कार्यों से कोई लेना-देना नहीं है।

इसीलिए आगम में अरहंतादि की भक्ति के बदले किसी भी प्रकार की इच्छा करने को निदान बंध कहा गया है।

जैसे हम ये कहें कि मेरे घर में शांति हो इसलिये मैं शांतिपाठ करवाऊँगी, मेरे घर में रुपया पैसा वैभव समृद्धि हो, इसलिए मैं सिद्धचक्र का विधान कराऊँगी। मेरा अमुक काम हो जाये, तो मैं छत्र चढ़ाऊँगी इत्यादि। इस तरह की भावना रखकर कोई भी धर्म कार्य करने से केवल पाप का ही बंध होता है।

इसलिये अरिहंत परमात्मा के दर्शन-पूजन विधानादि के समय हमें मात्र भगवान के गुणों की, वीतरागता, सर्वज्ञता की ही महिमा आनी चाहिये और उनको देखकर अपने गुणों की, अपने स्वरूप की महिमा आनी चाहिये, संसार का अन्य कोई भी भाव, किसी भी प्रकार की इच्छा नहीं होनी चाहिए, तभी अरिहंत परमात्मा के दर्शन-पूजन और विधानादि करना सार्थक है, वर्ना ये परिणाम शुभ होते हुए भी पाप बंध का ही कारण है।

यदि भावना ही करनी है तो ऐसी करो कि *भगवन् मैं कब आपके बताये मार्ग पर चलूँगा, कब मुझे समकित मिलेगा कब स्वयं से प्रीति होगी? संत साधु बन के विचरूँ वह घड़ी कब आयेगी!!

हे मानव! क्यों भ्रमित हो रहे हो? जब मंदिर जी जाने की भावना करते हैं, पुण्यबंध तो तभी से शुरू हो जाता है, सोचिये तो अभी मंदिर जी पहुँचे भी नहीं और फल मिलना शुरू। मंदिर जी पहुँचने पर, जिनेन्द्र परमात्मा की भावों से आराधना करने पर तो सच्चा आत्मिक-सुख मिलता है!! इस तुच्छ सांसारिक-वैभव की क्या याचना करना? ये तो ऐसे मिलता है जैसे गेहूँ की खेती करने वाले किसान को गेहूँ के साथ भूसा।

इसलिये, तू तो निस्वार्थ भाव से भगवान की भक्ति आराधना कर, और उनके मार्ग का अनुसरण करते हुये स्वयं की आराधना कर, तो इन सांसारिक दुःखों से हमेशा के लिये मुक्ति मिल जायेगी। इन्द्र का पद, नरेन्द्र का पद, चक्रवर्ती आदि का वैभव तो तुझे भूसे की तरह स्वयं मिलेगा ही मिलेगा। जैसे किसान अनाज के लिये खेती करता है, और भूसा उसे सहज ही प्राप्त होता है, ठीक उसी प्रकार तू वीतराग भाव से वीतरागी प्रभु की भक्ति कर, भूसे रूप लौकिक अनुकूलतायें तो तुझे सहज ही प्राप्त होंगी।

अतः कभी भी हमें किसी भी आकांक्षा की भावना से पूजन विधान आदि नहीं करना चाहिए।

-डॉ. रंजना जैन
पर्ल पैशन, बापू नगर, जयपुर

क्या विरासत का हस्तांतरण कर पाएंगे हम...?

आज के घोर आर्थिक व भोग विलास की अंधी दौड़ में हम सब इस तरह व्यस्त हैं जैसे एक चींटी निरन्तर चलती हुई दिखाई देती है लक्ष्यविहीन होकर। विश्राम करने का भी वक्त उसके पास नहीं है। उसी तरह हम भी सांसारिक जीवन की उधेड़बुन, भोग वासना की अभीप्साओं की आपूर्ति करने में अपना समूचा जीवन व्यतीत कर देते हैं, लेकिन ये विस्मृत कर देते हैं कि आने वाली पीढ़ियों में हमारे द्वारा सद्गुणों का रूपांतरण, स्थानांतरण किस तरह हो?

इस पर निष्पक्ष और निरपेक्ष भाव से विचार करेंगे तो हमारी जीवन शैली, हमारा आचरण, हमारा सिकुड़ता सामाजिक जीवन, बदलती परिवार की परिभाषा, सामाजिक जिम्मेदारियों से दूर हटना, अर्थ की प्राथमिकता के आगे बेबस लाचार और दम तोड़ता आत्मीयता और अपनत्व का भाव। जिसकी वजह से हम अपने बच्चों को भी भावशून्य और संवेदनहीन बना रहे हैं। उन्हें भौतिकता के जाल में फंसाने के लिए माता-पिता का आचरण ही जिम्मेदार है।

आज युवा पीढ़ी को माता-पिता अकूत धन का तो उत्तराधिकारी बनाकर जा रहे हैं। उसे कुछ करने की जरूरत नहीं है। बड़ा बैंक बैलेंस, अनगिनत भूखंडों का मालिक, मानसिक ऊर्जाक्षय करने वाले भौतिक संसाधनों का उत्तराधिकारी, एक से अधिक वाहनों का मालिक। लेकिन आध्यात्मिक, सामाजिक, पारिवारिकता प्रकाश उसके जीवन में नहीं फैला पा रहे हैं। आत्मीयता और अपनत्व का भाव प्रवाहित करने में भी नाकामयाब साबित हो रहे हैं। जिसके अभाव में बालक दिमाग से अनुर्वर (बंजर), मानसिक दरिद्रता और दुर्बलता का शिकार बन रहा है। केवल और केवल भोग विलास और वासना के अतिरिक्त जीवन में कुछ सकारात्मक परिलक्षित नहीं होता।

इसके पक्षीय प्रभाव के रूप में एकाकी जीवन, अंतरजातीय विवाह, सामाजिक, पारिवारिक संवेदनशून्यता दिखाई देती है।

हम धन रूपी निर्जीव विरासत का तो आसानी से हस्तांतरण कर देते हैं उसे लेकिन संस्कारों की छांव, समर्पण का भाव, उदारता, करुणा, सहानुभूति, आत्मीयता और अपनत्व भाव का हस्तांतरण करने में नाकाबिल साबित हो रहे हैं।

आज सब ओर एक जैसी बाते सुनाई देती हैं। बच्चा बहुत व्यस्त है, बच्चा विदेश में रहता है, बड़े पैकेज पर काम करता है, बड़ी गाड़ी खरीद ली, बड़ा बंगला क्रय कर लिया, विदेशी महंगा मोबाइल, विदेशी किस्म का डॉग पाल रखा है आदि आदि। लेकिन उसके इस विशाल और विराट जीवन में कहीं समाज, परिवार और राष्ट्र की प्राथमिकता नजर नहीं आती। इस पर चिंतन करने की कोई चिंता नहीं कर रहा है। आज हमारे समाज में कई बुजुर्ग अपनी संस्कार विहीन संतान का दंश झेलने को मजबूर है। आज वो उन तथाकथित बड़े पैकेज पर काम करने वाले संतानों की सुख सुविधा तो दूर उनके दर्शन करने को तरसते हैं।

यदि हम बच्चों को संस्कारों और सद्व्यवहार का पुंज वाकई में हस्तांतरण करना चाहते हैं तो साधना और साधनों की पवित्रता से धनार्जन पर, संयमित जीवनचर्या नियमित स्वाध्याय और दैनिक आध्यात्मिक क्रियाओं पर जोर डालना होगा, एक संकल्प और दृढ़ता के साथ। समर्पण और त्याग भाव से किस तरह परिवार के कमजोर सदस्य को उठाया जाए ये भाव हमें अपने अंदर जगाना होगा तब हमारा बच्चा कुछ सीखेगा। उन्हें परिवार और समाज का महत्त्व बताना होगा। अपने संघर्ष की गाथा भी सुनानी चाहिए। कभी कभार अर्थाभाव का अहसास भी करवा सकते हैं।

संस्कार रूपी वृक्ष तेजी से सूखता जा रहा है। इसका दर्शन आज हमें अपने बच्चो के व्यवहार में नजर आता है।

लघुपथगामी बन बच्चे बाजारवादी संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं जिसकी वजह से उनकी आवश्यकताए तेजी से बढ़ रही हैं। बाजार की प्रत्येक वस्तु उन्हें अपने काम की नजर आती है। उन अनावश्यक वस्तुओं के परिग्रह के चक्कर में परिवार समाज और राष्ट्र चिंतन के समर्पण और दायित्व गौण हो गए हैं।

निष्कर्षतः हम अपने बच्चो को सद्संस्कारो की वो अनुपम और अद्वितीय थाती हस्तांतरित करें जिससे वो एक सभ्य और जिम्मेदार सद्नागरिक बनें, उनका प्रत्येक कार्य का केंद्र 'मैं' नही 'हम' में हो।

-पवन कुमार जैन
जयपुर

शाखा ग्वालियर

अ.भा. पल्लीवाल जैन महासभा शाखा ग्वालियर के तत्वाधान में 9 व 10 अक्टूबर को दो दिवसीय तीर्थयात्रा संपन्न की गयी। प्रथम ए.सी. स्लीपर बस को शाखा के वरिष्ठ सदस्य श्री घनश्याम दास जैन, द्वितीय ए.सी. स्लीपर बस को श्री पारस जैन (PD Sons), तृतीय ए.सी. स्लीपर बस को श्री पवन जैन द्वारा झंडी दिखाकर रवाना किया।

सबसे पहले सभी यात्रियों ने चांदखेड़ी पहुँचकर भगवान श्री आदिनाथ जी का अभिषेक किया तथा मुनिपुंगव श्री सुधासागर महाराज को श्रीफल भेंट करके आशीर्वाद प्राप्त किया। सभी धर्मार्थी ने मुनिश्री से ग्वालियर की धरती पर अपना अगला चातुर्मास करने का विनम्र आग्रह किया तथा शाखा के लोगों ने मिलकर नवनिर्माणाधीन गर्भगृह के लिए रु. 21,000/- की राशि भी दान की। उसके पश्चात् भोजन करके जहाजपुर के लिए प्रस्थान किया।

शाम को यात्रियों ने जहाजपुर पहुँचकर संगीतमय सामूहिक आरती की गयी। यात्री निवास में रात्रि विश्राम से पहले भजन प्रतियोगिता भी रखी एवं विजेताओं को पुरस्कार भी दिए। सुबह भगवान श्री मुनिसुब्रतनाथ जी का अभिषेक एवं पूजन करके विधान किया गया। जिसमें सभी लोगों ने बड़े ही भक्ति एवं उल्लास के साथ विधान संपन्न हुआ। तत्पश्चात भोजन करके यात्रा अपने अंतिम पड़ाव श्री बिजौलिया पारसनाथ तीर्थक्षेत्र पहुँची। यहाँ पर सभी ने क्षेत्र पर सभी मंदिरों के दर्शन किये तथा फिर मिलकर संगीतमय सामूहिक संध्या आरती की एवं मंदिर जी में भक्तिभाव से श्री पारसनाथ चालीसा का पाठ किया।

3 बसों में कुल 95 तीर्थयात्री साथ गए थे। यात्रा के दौरान बच्चों, महिलाओं एवं बुजुर्गों ने काफी उत्साह दिखाया। महिला मंडल द्वारा बस में जैन अंताक्षरी एवं तम्बोला गेम खिलाया गया। व कई लोगों ने भजन गाकर यात्रा को मनोरंजक एवं यादगार बना दिया। अंत में शाखा अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश जी जैन द्वारा सभी कार्यकर्ताओं एवं सहयात्रिओं का आभार व्यक्त किया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजीव रतन जी जैन का मार्गदर्शन एवं व्यवस्थाओं में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

****

शाखा सवाई माधोपुर

अ.भा. पल्लीवाल जैन महासभा शाखा सवाई माधोपुर द्वारा दिनांक 2.10.2021 को पल्लीवाल दिवस कार्यक्रम जैन मन्दिर साहूनगर, सवाई माधोपुर में मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान नवीन कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण भी करवायी गयी तत्पश्चात समाज का सामूहिक भोजन कार्यक्रम भी रखा गया। उसके उपरान्त मन्दिर में नवकार मंत्र का जाप किया एवं सामूहिक महाआरती की गयी, तत्पश्चात् उपस्थित सभी के द्वारा एक दूसरे से क्षमा याचना की गयी।

खूबी और खामी दोनों ही होती है हर इंसान में
जो तराशता है उसे खूबी नजर आती है
और जो तलाशता है उसे खामी नजर आती है।

शाखा समाचार

शाखा आगरा

दिनांक 10.09.2021 को अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा शाखा आगरा द्वारा कार्यकारिणी की मीटिंग श्री शिवकुमार जी जैन शाखा अध्यक्ष की अध्यक्षता में श्री पल्लीवाल दिगंबर जैन मंदिर, धूलियागंज, आगरा पर की गई, जिसमें शाखा के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य सहित सक्रिय आमंत्रित सदस्य उपस्थित रहे।

कार्यक्रम अनुसार श्री सुनील जैन ठेकेदार जी (महामंत्री, आगरा दिगंबर जैन परिषद), श्री तपेश जैन ठेकेदार जी (कोषाध्यक्ष, भाजपा ब्रज क्षेत्र किसान मोर्चा), श्री प्रमेंद्र जैन (मीडिया प्रभारी, भाजपा ब्रज क्षेत्र, अल्पसंख्यक मोर्चा), श्री रविंद्र जैन हेमा भाई (कार्यकारिणी सदस्य, ब्रज अल्पसंख्यक मोर्चा), श्री सतीश चंद जैन (उपमंत्री, दिगंबर जैन परिषद), श्री राकेश जैन बजाज (उपप्रबंधक, आगरा दिगंबर जैन परिषद), श्री मनीष जैन ठेकेदार (मंदिर उपमंत्री, आगरा दिगंबर जैन परिषद), श्री विमल जैन (कार्यकारिणी सदस्य, आगरा दिगंबर जैन परिषद), श्री सौरव जैन शास्त्री (कार्यकारिणी सदस्य, आगरा दिगंबर जैन परिषद) आदि सभी अतिथियों का स्वागत आगरा शाखा की कार्यकारिणी एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों ने साफा पटका, माला पहनाकर किया। कार्यक्रम पश्चात स्वल्पाहार की व्यवस्था भी की गई। कार्यक्रम का सफल संचालन राहुल जैन एड. (शाखा मंत्री) ने किया। जिसमें प्रमुख रूप से- शिवकुमार जैन, राहुल जैन एड., अनिल जैन बजाज, विजय जैन, नितेश जैन, दीपक जैन, संदीप जैन, अरुण जैन, आलोक जैन, यतेंद्र जैन, राकेश जैन, राजेंद्र जैन, मयंक जैन, कुलदीप जैन, शिवम जैन, हैप्पी जैन, सम्यक जैन, नरेंद्र जैन, लोकेश जैन, अमित जैन, मोंटू जैन, प्रदीप जैन, वीरेंद्र जैन, मनीष जैन लवली, प्रमोद जैन, सिद्धार्थ जैन, अनंत जैन, राहुल जैन, छोटू जैन आदि भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

शाखा फिरोजाबाद

अखिल भारतीय पल्लीवाल महासभा शाखा फिरोजाबाद द्वारा दिनांक 3 अक्टूबर 2021 को वार्षिक क्षमावाणी समारोह का आयोजन छदामी लाल जैन मन्दिर में परम पूज्य गुरूवर 108 आर्चाय सुरत्न सागर जी के पावन सानिध्य में श्री संजीव जैन की अध्यक्षता में किया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि श्री राजीव रतन जैन (महासभा महामंत्री) एवं मंच उद्घाटनकर्ता श्री विनोद जैन मिलेनियम, दीप प्रजवलन श्री विमल चन्द्र जैन रैता वाले, चित्र अनावरणकर्ता श्री सम्भव प्रकाश जैन पादप्रक्षलनकर्ता श्री पुष्पेन्द्र जैन, सतेन्द्र जैन झिलमिल परिवार, भोजन पुण्यार्जक श्री महेश चन्द्र जैन एडवोकेट, श्री राहुल जैन छतारी, पुरस्कार पुण्यार्जक श्री सुधीर कुमार जैन ठेकेदार, वृद्धजन सम्मान श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन गणेश नगर व मंच संचालन श्री अनिल जैन एडवोकेट द्वारा किया गया। विशेष आर्कषण केन्द्र रहे श्री राजीव रतन जैन जी जिन्होंने पल्लीवाल समाज का इतिहास बताया और सभी लोगों ने क्षमा का भाव प्रकट किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों द्वारा जैन प्रश्न मंच व जैन तम्बोला का आयोजन किया गया और सभी लोगों ने आनन्द प्राप्त किया।

कार्यक्रम के बाद विधवा सहायता के लिये श्री विमल चन्द्र जैन रैता वाले ने रु. 12,000/- व श्री संजीव जैन अध्यक्ष पल्लीवाल महासभा शाखा फिरोजाबाद की माताजी श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन धर्मपत्नी स्व. श्री नवीन चन्द्र जी जैन द्वारा रु. 12,000/- एवं श्री सुभाष चन्द्र जैन अनुराग जैन (महावीर जी वाले) ने रु. 5,000/- सहायता के रूप में प्रदान किये।

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री मनमोहन जी जैन
(पुण्यतिथि : 25.10.2014)

स्व. श्रीमती शान्ती देवी जी जैन
(पुण्यतिथि : 20.10.2019)

हम सभी परिवारजन आपके प्रेरणादायक चरित्र का स्मरण करते हुए श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पौत्री-दामाद :
नेहा-राहुल
यामिनी-चिराग
नवासी :
सानवी, मीराया, दृश्या

पुत्र-पुत्रवधु :
उमेश-ममता
एवं
समस्त बरवासिया परिवार

भाई :
रिखबचन्द
बहन-बहनोई :
त्रिशला
चन्द्रप्रभा-सुमेरचन्द

FIRM
You Kay Distributors
Distributors for Alwar
GALA | SIGNORAWARE | ACE (GLAIR) | KOHE (KANGARO) | EAGLE

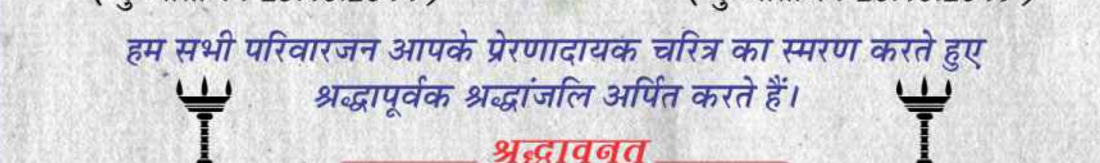

111, M.G. Market Road No. 2, Market, Alwar
Mob.: 9413303581 • email : youkaydistributors@gmail.com

निवास : 61, चेतन एन्क्लेव फेज-प्रथम, जयपुर रोड, अलवर

Shweta's Rangoli

Kurtis, Suit Sets, Unstitched Material, Sarees & Accessories

We aim at creating the best & most beautiful ethnic wear for women at pocketfriendly prices, making it affordable for all!

Address: S-10 Peeyush Path, Bapu Nagar, Jaipur, Rajasthan 302015

Contact: 9660446668

We provide courier delivery Pan India

Shweta's Rangoli

चतुर्थ पुण्यतिथि पर श्रृद्धांजलि

श्री महावीर प्रसाद जी जैन

(स्वर्गवास 27.10.2017)

हम सभी परिवारजन आपके प्रेरणादायक चरित्र और जीवन का स्मरण करते हुए श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

मुन्नी देवी जैन
(धर्मपत्नी)

वीरेन्द्र कुमार-महारानी जैन
राजेन्द्र प्रसाद-कुसुम जैन
राधे लाल-विनोद जैन
माया देवी

पवन कुमार-नीरू *(पुत्र-पुत्रवधु)*
पंकज जैन *(पुत्र)*
शालिनी-सुमित *(पुत्री-दामाद)*
कुनाल, प्रशम, ऋषभ, सारा

एवम् समस्त परिवारजन सकतपुर वाले (आगरा)

निवास :
फ्लेट नं. 203, गोल्डन सौभाग्य, बी-81, राजेन्द्र मार्ग,
बापू नगर, जयपुर-302015
सम्पर्क : 9811793746, 9810013895, 9540729705

(CR D-2623)

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री हरीशचन्द्र जी जैन)

(पुण्यतिथि : 21.5.2017)

स्व. ई. श्री मोहित कुमार जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन)

(पुण्यतिथि : 9.8.2018)

हम आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए
भगवान वीर से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती मिथलेश जैन
(धर्मपत्नी)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(पुत्री-दामाद)

श्रीमती मिथलेश जैन
(माँ)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(बहन-बहनोई)

मोहित कुमार जैन ट्रस्ट (पंजि.)

ए/165, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली-110077
दूरभाष : 9599660709, 9599230509

बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं होम्योपैथिक के महान ज्ञाता

डॉ. रज्जन सिंह जैन

चाह मिटी, चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिए, वो शहंशाह॥

उक्त पंक्तियों में निहित संदेश डॉ. रज्जन सिंह जैन की जीवन शैली ''संतोषी सदा सुखी'' को दर्शाता है।

डॉ. रज्जन सिंह जैन का जन्म 10 जून 1935 को डॉ. मूलचन्द जैन एवं बादामी देवी जैन के घर सिकन्दरा, आगरा में हुआ। आपने अपनी प्रारंभिक शिक्षा आगरा से पूर्ण की। तदुपरान्त उच्च शिक्षा हेतु आपने नेशनल हौम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, लखनऊ में दाखिला लिया। 1960 में डॉक्टरी की डिग्री अच्छे अंकों से प्राप्त कर आप वापस अपने गृह नगर आये।

आपके पिता स्व. डॉ. मूलचन्द जैन उस समय सिकन्दरा में एकमात्र मशहूर डॉक्टर हुआ करते थे। उन्हीं से प्रेरित होकर आपने अपना मेडिकल करियर डॉ. दिलीप सरकार, दिल्ली गेट, आगरा के सानिध्य में प्रारंभ किया। डॉ. सरकार के साथ कार्य करते-करते आप कई वर्षों तक 'आगरा होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन' के सेक्रेटरी रहे। आपकी सतत सेवाओं तो द्रष्टिगत रखने हुए 'उत्तर प्रदेश चिकित्सा परिषद (लखनऊ) होम्यो संकाय आगरा विश्वविद्यलय (आगरा) के द्वारा आपको कई वर्षों तक परीक्षक के रुप में चयनित किया गया। और प्रदेश के कई मेडिकल कॉलेज में आपने परीक्षक के रूप में अपनी सेवायें प्रदान की। जब जर्मनी से होम्योपैथिक डाक्टर्स का प्रतिनिधी मंडल आगरा आया तो आपको उनके सानिध्य का सुअवसर प्राप्त हुआ। आपको भारत के पंचम राष्ट्रपति डॉ. फ़ख़रूद्दीन अली अहमद से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसका फोटोग्राफ आज भी उनके परिवार के पास सुरक्षित है। राष्ट्रीय जैन संत शिरोमणी आचार्यश्री ज्ञान सागर जी महाराज के द्वारा 'ऑल इंडिया जैन डॉक्टर्स कन्वेंशन' में भी आपको सम्मानित किया गया।

डॉ. साहब बहुत ही शानदार व्यक्तित्व के स्वामी थे। उनकी जीवन शैली बहुत ही सरल, सहज, स्वच्छ और शांत थी। वे संयम, संतोषी, सोम्यता, समता, सरलता और सहिष्णुता के प्रतीक थे। वे अत्यंत ही दयालु एवं उदार स्वभाव के धनी थे। उन्होंने अपने पेशे में सेवा भाव को सर्वोपरि माना और कभी उसे वयवसायिक रूप नहीं दिया।

डॉ. साहब ने सन् 2007 में श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन धर्मार्थ चिकित्सालय सिकन्दरा को अपनी निःशुल्क सेवायें देना प्रारम्भ किया और अंत तक वे से उसे संचालित करते रहे। उन्होंने अपने जीवन के 60 वर्ष एक मेडिकल संत के रूप में जनता की सेवा करते हुए व्यतीत किये और 87 वर्ष की आयु पूर्ण कर श्रीचरणों में विलिन हुए।

आपका जीवन हमारी प्रेरणा है, आपका आदर्श हमारा मार्गदर्शक है। आपका भावनात्मक स्वभाव, पारिवारिक भावना और उच्च विचार हमें जीवन भर याद रहेंगे।

तेरा विराट यह रूप, शब्द अम्बर में नहीं समाता है।
कितना कुछ भी कहूँ, किन्तु शेष बहुत रह जाता है॥

पत्रिका सदस्यता

3139. Sh. Manoj Mohan Ji Jain, 612, Sector 6C, Avas Vikas Colony, Sikandra, Bodla, Agra *(CR D-2624)*

3140. Sh. Bhupendra Kumar Ji Jain, C/o Khushbu Gift Galary, Mandawar Mahua Road, Th. Madawar, Dist. Dausa-321609, Mob.: 7014515453 *(CR D-2652)*

3141. Sh. Pawan Ji Jain, New Jain Automobile, Exhibition Road, Bharatpur-321001, Mob.: 9414894235 *(CR D-2593)*

3142. Sh. Mukesh Kumar Ji Jain, 50 Kha, Shree Ram Nagar Extension, Khirni Phatak, Jhotwara, Jaipur-302012, Mob.: 9460309214 *(CR D-2594)*

3143. Sh. Vijay Kumar Ji Jain, H.No. A-192, Ambedkar Nagar, Alwar-301001, Mob.: 8127363580 *(CR D-2595)*

3144. Pramila Ji Jain, Flat No. 13, BPCL Staff Residential Quarters, Asian Heart Hospital Lane, Avenue 2, Street 6, BKC, Bandra (E), Mumbai-400051 *(CR D-2625)*

3145. Sh. Alok Ji Jain, 40, Van Vihar Colony, Tonk Road, Jaipur-302018 *(CR D-2626)*

महासभा सहायता

★ **श्री जयेषु जी जैन** पुत्र श्री सुरेश चन्द जैन वैद्यजी मिढाकुर (आगरा) (रायभा वाले) ने अपने जन्मदिन (12 अक्टूबर) के उपलक्ष में महासभा सहायता हेतु रु. 501/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4920)*

महासभा सदस्यता

★ **श्री प्रभात जी जैन** पुत्र स्व. श्री प्रेमचन्द जी जैन, *238, स्कीम नं. 1, अलवर, मो.: 8058576142 (र.सं. 5008)*

माफी

राधिका और नवीन को आज तलाक के कागज मिल गए थे। दोनों साथ ही कोर्ट से बाहर निकले। दोनों के परिजन साथ थे और उनके चेहरे पर विजय और सुकून के निशान साफ झलक रहे थे। चार साल की लंबी लड़ाई के बाद आज फैसला हो गया था।

दस साल हो गए थे शादी को मग़र साथ में छः साल ही रह पाए थे।

चार साल तो तलाक की कार्यवाही में लग गए।

राधिका के हाथ में दहेज के समान की लिस्ट थी जो अभी नवीन के घर से लेना था और नवीन के हाथ मे गहनों की लिस्ट थी जो राधिका से लेने थे।

साथ में कोर्ट का यह आदेश भी था कि नवीन दस लाख रुपये की राशि एकमुश्त राधिका को चुकाएगा।

राधिका और नवीन दोनों एक ही टेम्पो में बैठकर नवीन के घर पहुंचे। दहेज में दिए समान की निशानदेही राधिका को करनी थी।

इसलिए चार वर्ष बाद ससुराल जा रही थी। आखरी बार बस उसके बाद कभी नहीं आना था उधर।

सभी परिजन अपने-अपने घर जा चुके थे। बस तीन प्राणी बचे थे। नवीन, राधिका और राधिका की माता जी।

नवीन घर में अकेला ही रहता था। मां-बाप और भाई आज भी गांव में ही रहते हैं।

राधिका और नवीन का इकलौता बेटा जो अभी सात वर्ष का है कोर्ट के फैसले के अनुसार बालिग होने तक वह राधिका के पास ही रहेगा। नवीन महीने में एक बार उससे मिल सकता है।

घर में प्रवेश करते ही पुरानी यादें ताज़ी हो गई। कितनी मेहनत से सजाया था इसको राधिका ने। एक-एक चीज में उसकी जान बसी थी। सब कुछ उसकी आँखों के सामने बना था। एक-एक ईंट से धीरे-धीरे बनते घरोंदे को पूरा होते देखा था उसने। सपनों का घर था उसका। कितनी शिद्दत से नवीन ने उसके सपने को पूरा किया था।

नवीन थकाहारा सा सोफे पर पसर गया। बोला 'ले लो जो कुछ भी चाहिए मैं तुझे नहीं रोकूंगा।'

राधिका ने अब गौर से नवीन को देखा। चार साल में कितना बदल गया है। बालों में सफेदी झांकने लगी है। शरीर पहले से आधा रह गया है। चार साल में चेहरे की रौनक गायब हो गई।

वह स्टोर रूम की तरफ बढ़ी जहाँ उसके दहेज का अधिकतर समान पड़ा था। सामान ओल्ड फैशन का था इसलिए कबाड़ की तरह स्टोर रूम में डाल दिया था। मिला भी कितना था उसको दहेज। प्रेम विवाह था दोनों का। घर वाले तो मजबूरी में साथ हुए थे।

प्रेम विवाह था तभी तो नजर लग गई किसी की। क्योंकि प्रेमी जोड़ी को हर कोई टूटता हुआ देखना चाहता है।

बस एक बार पीकर बहक गया था नवीन। हाथ उठा बैठा था उस पर। बस वो गुस्से में मायके चली गई थी।

फिर चला था लगाने सिखाने का दौर। इधर नवीन के भाई भाभी और उधर राधिका की माँ। नौबत कोर्ट तक जा पहुंची और तलाक हो गया।

न राधिका लोटी और न नवीन लाने गया।

राधिका की माँ बोली 'कहाँ है तेरा सामान? इधर तो नहीं दिखता। बेच दिया होगा इस शराबी ने?'

'चुप रहो माँ'

राधिका को न जाने क्यों नवीन को उसके मुँह पर शराबी कहना अच्छा नहीं लगा।

फिर स्टोर रूम में पड़े सामान को एक-एक कर लिस्ट में मिलाया गया।

बाकी कमरों से भी लिस्ट का सामान उठा लिया गया।

राधिका ने सिर्फ अपना सामान लिया नवीन के समान को छुवा भी नहीं। फिर राधिका ने नवीन को गहनों से भरा बैग पकड़ा दिया।

नवीन ने बैग वापस राधिका को दे दिया 'रख लो, मुझे नहीं चाहिए, काम आएगें तेरे मुसीबत में।'

गहनों की कीमत 15 लाख से कम नहीं थी।

'क्यूँ, कोर्ट में तो तुम्हारा वकील कितनी दफा गहने-गहने चिल्ला रहा था।'

'कोर्ट की बात कोर्ट में खत्म हो गई, राधिका। वहाँ तो मुझे भी दुनिया का सबसे बुरा जानवर और शराबी साबित किया गया है।'

सुनकर राधिका की माँ ने नाक भों चढ़ाई।

'नहीं चाहिए, वो दस लाख भी नहीं चाहिए।'

'क्यूँ?' कहकर नवीन सोफे से खड़ा हो गया।

'बस यूँ ही' राधिका ने मुँह फेर लिया।

'इतनी बड़ी जिंदगी पड़ी है कैसे काटोगी? ले जाओ, काम आएगें।'

इतना कहकर नवीन ने भी मुंह फेर लिया और दूसरे कमरे में चला गया। शायद आंखों में कुछ उमड़ा होगा जिसे छुपाना भी जरूरी था।

राधिका की माता जी गाड़ी वाले को फोन करने में व्यस्त थीं।

राधिका को मौका मिल गया। वो नवीन के पीछे उस कमरे में चली गई।

वो रो रहा था। अजीब सा मुँह बना कर। जैसे भीतर के सैलाब को दबाने दबाने की जद्दोजहद कर रहा हो। राधिका ने उसे कभी रोते हुए नहीं देखा था। आज पहली बार देखा न जाने क्यों दिल को कुछ सुकून सा मिला।

मग़र ज्यादा भावुक नहीं हुई।

सधे अंदाज में बोली 'इतनी फिक्र थी तो क्यों दिया तलाक?'

'मैंने नहीं तलाक तुमने दिया।'

'दस्तखत तो तुमने भी किए।'

'माफी नही माँग सकते थे?'

'मौका कब दिया तुम्हारे घर वालों ने। जब भी फोन किया काट दिया।'

'घर भी आ सकते थे?'

'हिम्मत नहीं थी?'

राधिका की माँ आ गई। वो उसका हाथ पकड़ कर बाहर ले गई। 'अब क्यों मुँह लग रही है इसके? अब तो रिश्ता भी खत्म हो गया।'

मां-बेटी बाहर बरामदे में सोफे पर बैठकर गाड़ी का इंतजार करने लगीं।

राधिका के भीतर भी कुछ टूट रहा था। दिल बैठा जा रहा था। वो सुन्न सी पड़ती जा रही थी। जिस सोफे पर बैठी थी उसे गौर से देखने लगी। कैसे-कैसे बचत कर के उसने और नवीन ने वो सोफा खरीदा था। पूरे शहर में घूमी तब यह पसन्द आया था।'

फिर उसकी नजर सामने तुलसी के सूखे पौधे पर गई। कितनी शिद्दत से देखभाल किया करती थी। उसके साथ तुलसी भी घर छोड़ गई।

घबराहट और बढ़ी तो वह फिर से उठ कर भीतर चली गई। माँ ने पीछे से पुकारा मग़र उसने अनसुना कर दिया। नवीन बेड पर उल्टे मुंह पड़ा था। एक बार तो उसे दया आई उस पर। मग़र वह जानती थी कि अब तो सब कुछ खत्म हो चुका है इसलिए उसे भावुक नहीं होना है।

उसने सरसरी नजर से कमरे को देखा। अस्त व्यस्त हो गया है पूरा कमरा। कहीं कहीं तो मकड़ी के जाले झूल रहे हैं।

कितनी नफरत थी उसे मकड़ी के जालों से?

फिर उसकी नजर चारों और लगी उन फोटो पर गई जिनमें वो नवीन से लिपट कर मुस्करा रही थी।

कितने सुनहरे दिन थे वो।

इतने में माँ फिर आ गई। हाथ पकड़ कर फिर उसे बाहर ले गई।

बाहर गाड़ी आ गई थी। सामान गाड़ी में डाला जा रहा था। राधिका सुन्न सी बैठी थी। नवीन गाड़ी की आवाज सुनकर बाहर आ गया।

अचानक नवीन कान पकड़ कर घुटनों के बल बैठ गया।

बोला- 'मत जाओ, माफ कर दो।'

शायद यही वो शब्द थे जिन्हें सुनने के लिए चार साल से तड़प रही थी। सब्र के सारे बांध एक साथ टूट गए। राधिका ने कोर्ट के फैसले का कागज निकाला और फाड़ दिया। और मां कुछ कहती उससे पहले ही लिपट गई नवीन से। साथ में दोनो बुरी तरह रोते जा रहे थे।

दूर खड़ी राधिका की माँ समझ गई कि कोर्ट का आदेश दिलों के सामने कागज से ज्यादा कुछ नहीं। काश उनको पहले मिलने दिया होता?

अगर माफी मांगने से ही रिश्ते टूटने से बच जाए, तो माफ़ी मांग लेनी चाहिए।

केंद्रीय खेल व युवा मंत्री भारत सरकार श्री अनुराग ठाकुर के कर कमलों द्वारा

पर्यावरण मित्र दिव्या कुमारी जैन नेशनल यूथ अवार्ड से सम्मानित

गत 12 वर्षों से पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक चेतना का अभियान चला रही कोटा जिले की शान, पर्यावरण मित्र व कितने ही सम्मानों से सम्मानित हो चुकी दिव्या कुमारी जैन पुत्री श्री संजय कुमार जैन (शिक्षक) को 12 अगस्त 2021 को देश की राजधानी नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित भव्य कार्यक्रम में प्रतिष्ठित सम्मान नेशनल यूथ अवार्ड से भारत सरकार के खेल व युवा मंत्री श्री अनुराग ठाकुर के कर कमलों से सम्मानित किया गया। दिव्या को प्रमाण पत्र, चांदी का मेडल व नगद राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर दिव्या जैन ने कहा कि यह सम्मान न केवल मेरा, मेरे परिवार का, जिले का बल्कि पूरे राज्य का मान व सम्मान बढ़ाने वाला सम्मान है, जिसे मैं अपने समस्त प्रेरक जनकों समर्पित करती हूं। जिनकी प्रेरणा, उत्साह, आशीर्वाद व सम्बल से मैंने यह पुरस्कार प्राप्त किया है। कार्यक्रम के पश्चात दिव्या ने माननीय मंत्री श्री अनुराग ठाकुर, वहां उपस्थित यूथ मिनिस्ट्री भारत के जॉइंट सचिव आईआरएस श्री आसित सिंह, अन्य अधिकारी गण, उपस्थित अवार्डी व समस्तजन को अपनी पर्यावरण मित्र पत्रिका की प्रति व स्टिकर भेंट किये, जिसकी सबने सराहना की। इस पुरस्कार पर दिव्या को फोन पर बधाई व आशीर्वाद प्राप्त होने का क्रम शुरु हो गया है। दिव्या ने सबका आभार व्यक्त किया है।

दिव्या ने विश्वास व्यक्त किया है कि नया वर्ष 01.01.2022 पॉलीथिन मुक्ति का दिवस होगा, निश्चित रूप से पूरे भारत में पॉलीथिन व प्लास्टिक डिस्पोजल पर प्रतिबंध लगेगा, भले कम या ज्यादा, पर लगेगा जरूर, उसके विश्वास की एक बार फिर जीत होगी।

दिव्या ने बताया कि वह शीघ्र ही एक बड़ा प्लान बना रहीं हैं, जिसमें उसने 10 लाख लोगों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने का लक्ष्य रखा है। जिसके तहत वह उन्हें लगभग 50 हजार लोगों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण विशेषकर पॉलीथिन को उपयोग में नहीं लेने, पौधारोपण व उसकी सुरक्षा, स्वच्छता व स्वास्थ्य, बालिका शिक्षा व सुरक्षा की शपथ दिलवाई जाएगी। एक व्यक्ति कम से कम 20 लोगों को शपथ दिलवाएगा, शपथ दिलवाने वाले प्रेरक को टी-शर्ट अथवा कपड़े का बड़ा बैग/थैला निःशुल्क दिया जाएगा। इसके लिए उन्हें शपथ लेते/दिलाते हुए की छोटी सी वीडियो व उनके नाम लिखकर वाट्सएप करना होगा। चूंकि यह बड़ा प्लान है अथवा इसकी पूरी तैयारी के बाद निर्णय लेकर शुरुआत की जाएगी, टी-शर्ट के लिए वह व्यापारियों से, जन प्रतिनिधियों आदि से पत्र लिखकर व्यवस्था के लिए कहेंगी। स्वयं की ओर से भी 500 टी-शर्ट वितरित करेंगी। साथ ही निवेदन करेंगी कि जो भी 10, 20, 50, 100 टी-शर्ट देना चाहे वे सम्पर्क कर सकते हैं :-

दिव्या कुमारी जैन
कोटा, राजस्थान, मो. 9214963491

वात्सल्य भोज एक कुप्रथा

बन्धुओं प्रतिवर्ष हम लोग दसलक्षण पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाते हैं। दस दिनों तक भक्ति और आराधना की सरिता बहती है सभी का मन प्रफुल्लित हो उठता है। दसलक्षण समाप्ति के पश्चात विभिन्न जगहों पर विभिन्न तिथियों पर कलशाभिषेक के आयोजन किये जाते हैं, जो कि वर्षों से किये जा रहे हैं। सभी लोग भक्ति भाव से उत्साह पूर्वक इन कलशाभिषेक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं।

कलशाभिषेक के इन कार्यक्रमों में अधिक से अधिक भीड़ जुटाने के उद्देश्य से हमने एक कुप्रथा को जन्म दे दिया और उस कुप्रथा को नाम दे दिया वात्सल्य भोज। जगह-जगह बड़े-बड़े होर्डिंग्स लगा दिये जाते हैं कि कलशाभिषेक के पश्चात वात्सल्य भोज का भी आयोजन है। लोग भी प्रतिदिन हिसाब रखते हैं कि आज का भोज फलां जगह पर है। इस वात्सल्य भोज में भीड़ को आकर्षित करने के लिये नाना प्रकार के पकवान, स्टॉल, रखे जाते हैं। आईसक्रीम जैसे अभक्ष्य पदार्थों को भी परोसा जाने लगा है। लोगों का मन कलशाभिषेक की ओर कम होता है, उनकी आकुलता व्याकुलता भोज की ओर अधिक होती है और मजे की बात तो ये है कि कलशाभिषेक के समय यदि 300 लोग मौजूद होते हैं तो वात्सल्य भोज में 800 लोग।

लोगों में भक्ति भाव जगाने अथवा भीड़ जुटाने के लिये क्या ये तरीका उचित है। इस तरह से प्रलोभन देकर भीड़ जुटाना उचित है क्या। यदि इस भोज के आयोजकों से इसका औचित्य पूछा जाए तो उनका जवाब होता है कि कलशाभिषेक के पश्चात घर पहुँचने में लोगों को रात हो जाती है और वे भोजन से वंचित ना रह जाएं इसलिए उनके लिये इस भोज की व्यवस्था की है। इन व्यवस्थापकों से पूछो जब ये भोज रात्रि भोजन त्यागियों के उद्देश्य से है तो 8-9 बजे तक क्यों इसका आयोजन चलता रहता है।

क्या आज से पाँच सात साल पहले कलशाभिषेक नहीं होते थे, क्या उनमें भीड़ नहीं आती थी। उस समय भी तो लोग दूर-दूर से कलशाभिषेक देखने आते थे, जो रात्रि भोजन के त्यागी थे वे अपना खाना साथ बांध कर लाते थे, अपने खाने को दूसरों के साथ बांट कर खाते थे पिकनिक जैसा माहौल बन जाता था। सभी को एक दूसरे के यहां घर की बनी खाद्य सामग्री मिल-बाँट कर खाने का अवसर मिलता था, सभी एक दूसरे की मनुहार करते थे, वो था असली वात्सल्य भोज। एक दूसरे के साथ वात्सल्य पूर्वक भोज।

बन्धुओं इस कुप्रथा को हमें खत्म करना होगा अन्यथा ये कुप्रथा हमारे लिये एक मजबूरी बन जाएगी कि कोई सा भी धार्मिक आयोजन करना हो तो पहले भोज की व्यवस्था करो। यदि हमें भोज करने का इतना ही शौक है तो हम अपने लिये भोज क्यों करें। इस आयोजन पर आने वाले खर्च की रकम को किसी ऐसी संस्था को दें जो मुनिराजों साधुओं व त्यागी व्रतियों के आहार की व्यवस्था करती हैं। हमारे द्वारा ऐसा करने से हमारे एक दिन के एक समय वात्सल्य भोज के खर्च से त्यागियों के लिये लगभग छः माह से लेकर साल भर तक के आहार की व्यवस्था हो सकती है।

-हेमंत कुमार जैन

पालीवाल पाईप फिटिंग्स, केसर गंज, अजमेर

शोक संवेदना

श्री प्रवीण कुमार जी जैन सुपुत्र श्री हरीश चन्द जैन, मौजपुर जिला अलवर का निधन दिनांक 23.09.2021 को अल्प आयु में हो गया। आप धार्मिक, सामाजिक व सरल स्वभाव के धनी थे।

श्री सुरेश कुमार जी जैन सुपुत्र स्व. श्री मुसद्दी लाल जी जैन का आकस्मिक निधन दि. 15.09.2021 को हो गया है। वह पल्लीवाल जैन महासभा दिल्ली के सदस्य एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। आप धार्मिक, सामाजिक व सरल स्वभाव के धनी थे।

श्रीमती सावित्री जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ताराचन्द जी जैन (हरी साउण्ड सर्विस) एवं श्री मगन चन्द जैन, संगठन मंत्री (राज.) की माताजी का स्वर्गवास दिनांक 29.09.2021 को 83 वर्ष की आयु में हो गया। आपकी धार्मिक क्षेत्र, सामाजिक व परिवारिक क्षेत्र में अनूठी पहचान थी।

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा वीर प्रभु से प्रार्थना करते हुए दिवंगत आत्माओं को श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.
TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.
AN ISO 9001:2008 COMPANY
PRODUCTS
-POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS
-PRESSED STEEL RADIATORS
-SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS
-PACKAGE SUBSTATION
CONTACT
Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India
Phone No : +91-562-3290391
Fax : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in

PRODUCTS :
Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers,
Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures,
RSJ Poles & GI Earthing Strips.

FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT

Fabrication & Galvanizing done as per
IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards
Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)
Plant Capacity : 18000 Tons / Year

Vijay Transmission
PVT. LTD.

Plant :
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

Corporate Office :
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि

स्व. श्री शिव कुमार जी पालीवाल

(मंडावर वाले)

(10 मार्च 1936 - 25 नवंबर 2020)

आपकी मधुर स्मृति, स्नेह, आदर्श, मार्गदर्शन, आशीर्वाद हमारे लिए सदैव प्रेरणादायक रहेंगे। आपकी प्रथम पुण्यतिथि पर समस्त परिवारजन भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पत्नी :
श्रीमती प्रमिला पालीवाल

पुत्री-दामाद :
चारू जैन-दीपक जैन

नवासा, नवासी :
सिद्धन्त जैन, खुशी जैन

शिव प्रेम चैरिटेबल ट्रस्ट

प्रमिला पालीवाल

फ्लेट नं. 13, बी.पी.सी.एल. स्टाफ रेजीडेंशियल क्वार्टर्स, एशियन हार्ट हॉस्पिटल लेन, एवेन्यू 2, स्ट्रीट 6, बी.के.सी., बांद्रा (पू.), मुम्बई-400051

(CR D-2620)

प्रथम पुण्यतिथि पर
भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती सुधा जैन
(14.01.1945 - 08.11.2020)

हम सभी परिवारजन आपके प्रेरणादायक चरित्र का स्मरण करते हुए श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्री-दामाद :
निशि
सीमा-भुवनेश
दोहिता :
यश
पड़दोहिता :
शिवाय

पति :
अजित प्रसाद जैन

दोहिती-दामाद :
नेहा-अंकित
सान्या-शुभम
रिमझिम-डॉ. हितेश
पड़दोहिती :
शनाया, अमाया

निवास :- 84/15, जल पथ, अरावली मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
मो.: 9928142825, 9828805849, 9929055599

With Best Compliments From

Authorised Distributor for

- ★ Johnson & Johnson Ltd.
- ★ SD. BIO SENSOR
- ★ Ortho Clinical Diagnostics
- ★ Lifescan-Division, for one touch Brand Glucometers & Strips.
- ★ Biorad Laboratories
- ★ Alere Medical
- ★ Transasia Biomedical Ltd.
- ★ LILAC Medicare

Sanjay Jain - Rajeev Jain

S.R. Enterprises

223, Bichoon Market, Kishanpole Bazar, Jaipur-302 003
Ph.: (O) 2322089, 2323903 (R) 2546017 • Fax : 0141-4022089
(M) +91-98290 12628, 94140 76265

मूल्यांकन

एक राह पर चलते-चलते दो व्यक्तियों की मुलाकात हुई। दोनों का गंतव्य एक था, तो दोनों यात्रा में साथ हो चले। सात दिन बाद दोनों के अलग होने का समय आया तो एक ने कहा- भाई साहब! एक सप्ताह तक हम दोनों साथ रहे, क्या आपने मुझे पहचाना?

दूसरे ने कहा- नहीं, मैंने तो नहीं पहचाना।

पहला यात्री बोला- महोदय, मैं एक नामी ठग हूँ, परन्तु आप तो महाठग हैं। आप मेरे भी गुरू निकले।

दूसरा यात्री बोला- कैसे?

पहला यात्री- कुछ पाने की आशा में मैंने निरंतर सात दिन तक आपकी तलाशी ली, मुझे कुछ भी नहीं मिला। इतनी बड़ी यात्रा पर निकले हैं तो क्या आपके पास कुछ भी नहीं है? बिल्कुल खाली हाथ हैं।

दूसरा यात्री- मेरे पास एक बहुमूल्य हीरा है और थोड़ी-सी रजत मुद्राएं भी हैं।

पहला यात्री बोला- तो फिर इतने प्रयत्न के बावजूद वह मुझे मिले क्यों नहीं?

दूसरा यात्री- मैं जब भी बाहर जाता, वह हीरा और मुद्राएं तुम्हारी पोटली में रख देता था और तुम सात दिन तक मेरी झोली टटोलते रहे। अपनी पोटली सँभालने की जरूरत ही नहीं समझी। तो फिर तुम्हें कुछ मिलता कहाँ से?

यही समस्या हर इंसान की है। आज का इंसान अपने सुख से सुखी नहीं है। दूसरे के सुख से दुखी है, क्योंकि निगाह सदैव दूसरे की गठरी पर होती है।

ईश्वर नित नई खुशियाँ हमारी झोली में डालता है, परन्तु हमें अपनी गठरी पर निगाह डालने की फुर्सत ही नहीं है। यही सबकी मूलभूत समस्या है। जिस दिन से इंसान दूसरे की ताकझांक बंद कर देगा उस क्षण सारी समस्या का समाधान हो जाऐगा।

'अपनी गठरी ही टटोलें।' जीवन में सबसे बड़ा गूढ़ मंत्र है। स्वयं को टटोले और जीवन-पथ पर आगे बढ़े सफलतायें आप की प्रतीक्षा में हैं।

कुल मिलाकर प्रसन्न वही है, जिस ने अपना मूल्यांकन किया, परेशान वही है जिस ने दूसरों का मूल्यांकन किया।

दो पोटली

भगवान ने जब इंसान की रचना की तो उसे दो पोटली दी। कहा एक पोटली को आगे की तरफ लटकाना और दूसरी को कंधे के पीछे पीठ पर। आदमी दोनों पोटलियां लेकर चल पड़ा।

हां, भगवान ने उसे ये भी कहा था कि आगे वाली पोटली पर नजर रखना पीछे वाली पर नहीं। समय बीतता गया। वह आदमी आगे वाली पोटली पर बराबर नजर रखता। आगे वाली पोटली में उसकी कमियां थीं और पीछे वाली में दुनिया की।

वे अपनी कमियां सुधारता गया और तरक्की करता गया। पीछे वाली पोटली को इसने नजरंदाज कर रखा था।

एक दिन तालाब में नहाने के पश्चात, दोनों पोटलियां अदल बदल हो गई। आगे वाली पीछे और पीछे वाली आगे आ गई।

अब उसे दुनिया की कमियां ही कमियां नजर आने लगी। ये ठीक नहीं, वो ठीक नहीं। बच्चे ठीक नहीं, पड़ोसी बेकार है, सरकार निक्कमी है आदि-आदि। अब वह खुद के अलावा सब में कमियां ढूंढने लगा।

परिणाम ये हुआ कि कोई नहीं सुधरा, पर उसका पतन होने लगा। वह चक्कर में पड़ गया कि ये क्या हुआ है? वो वापस भगवान के पास गया। भगवान ने उसे समझाया कि जब तक तेरी नजर अपनी कमियों पर थी, तू तरक्की कर रहा था। जैसे ही तूने दूसरों में मीन-मेख निकालने शुरू कर दिए, वहीं से तेरा पतन शुरू हो गया।

हकीकत भी यही है कि हम किसी को नहीं सुधार सकते, हम अपने आपको सुधार ले इसी में हमारा कल्याण है। हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा।

संकलन : चन्द्रशेखर जैन

द्वितीय पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती राजकुमारी जी जैन

(08.10.1954 - 25.10.2019)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना, प्रेरणा दायक चरित्र सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। हम सभी परिवारजन शत-शत नमन करते हुए अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

रिखब चन्द जैन
(पति)

पुत्र-पुत्रवधु :
रोबिन जैन-नेहा जैन

पुत्री-दामाद :
सौम्या जैन-गौरव जैन
(अमेरिका)

धेवता : पलवित जैन

जेठ :
प्रकाश चन्द जैन

देवर-देवरानी :
अशोक जैन-राखी जैन

नन्द-नन्दोई :
इन्द्रवती जैन-घासीलाल जैन
मंजू जैन-भोजराज जैन
विमलेश जैन-राजकुमार जैन
प्रभा जैन

पिता :
सुमेर चन्द जैन 'भगत जी'
(आगरा)

भाई-भाभी :
मुकेश जैन-रविबाला जैन
दिनेश जैन-कृष्णा जैन

बहिन-बहनोई :
ममता जैन-नलिन कुमार जैन

भतीजे-भतीजे वधु :
आशीष कुमार-पूनम जैन, मनीष जैन-कल्पना जैन, अजय जैन-दीपिका जैन, गौरव जैन

निवास : 93, कला कुंज कॉलोनी, मारुति स्टेट के पास, शाहगंज, बोदला रोड, आगरा, मो.: 9997586176, 8077645633

(CR D-2651)

क्रोध के दो मिनट

एक युवक ने विवाह के दो साल बाद परदेस जाकर व्यापार करने की इच्छा पिता से कही। पिता ने स्वीकृति दी तो वह अपनी गर्भवती पत्नी को माँ-बाप के जिम्मे छोड़कर व्यापार करने चला गया।

परदेश में मेहनत से बहुत धन कमाया और वह धनी सेठ बन गया। सत्रह वर्ष धन कमाने में बीत गए तो सन्तुष्टि हुई और वापस घर लौटने की इच्छा हुई। पत्नी को पत्र लिखकर आने की सूचना दी और जहाज में बैठ गया। उसे जहाज में एक व्यक्ति मिला जो दुखी मन से बैठा था। सेठ ने उसकी उदासी का कारण पूछा तो उसने बताया कि इस देश में ज्ञान की कोई कद्र नहीं है। मैं यहाँ ज्ञान के सूत्र बेचने आया था पर कोई लेने को तैयार नहीं है।

सेठ ने सोचा, इस देश में मैंने बहुत धन कमाया है, और यह मेरी कर्मभूमि है, इसका मान रखना चाहिए।

उसने ज्ञान के सूत्र खरीदने की इच्छा जताई।

उस व्यक्ति ने कहा- मेरे हर ज्ञान सूत्र की कीमत 500 स्वर्ण मुद्राएं हैं।

सेठ को सौदा तो महंगा लग रहा था... लेकिन कर्मभूमि का मान रखने के लिए 500 स्वर्ण मुद्राएं दे दी।

व्यक्ति ने ज्ञान का पहला सूत्र दिया- 'कोई भी कार्य करने से पहले दो मिनट रूककर सोच लेना।'

सेठ ने सूत्र अपनी किताब में लिख लिया।

कई दिनों की यात्रा के बाद रात्रि के समय सेठ अपने नगर को पहुँचा। उसने सोचा इतने सालों बाद घर लौटा हूँ तो क्यों न चुपके से बिना खबर दिए सीधे पत्नी के पास पहुँच कर उसे सरप्राईज (आश्चर्य उपहार) दूँ।

घर के द्वारपालों को मौन रहने का इशारा करके सीधे अपने पत्नी के कक्ष में गया तो वहाँ का नजारा देखकर... उसके पांवों के नीचे की जमीन खिसक गई। पलंग पर उसकी पत्नी के साथ एक युवक सोया हुआ था।

अत्यंत क्रोध में सोचने लगा कि मैं परदेस में भी इसकी चिंता करता रहा और ये यहां अन्य पुरुष के साथ...

दोनों को जिन्दा नही छोड़ूगाँ।

क्रोध में तलवार निकाल ली।

वार करने ही जा रहा था कि इतने में ही उसे 500 स्वर्ण मुद्राओं से प्राप्त ज्ञान सूत्र याद आ गया कि 'कोई भी कार्य करने से पहले दो मिनट सोच लेना...' सोचने के लिए रूका।

तलवार पीछे खींची तो एक बर्तन से टकरा गई। बर्तन गिरा तो पत्नी की नींद खुल गई। जैसे ही उसकी नजर अपने पति पर पड़ी वह खुश हो गई और कहा- आपके बिना जीवन सूना सूना था। इन्तजार में इतने वर्ष कैसे निकाले यह मैं ही जानती हूँ।

सेठ तो पलंग पर सोए पुरुष को देखकर क्रोधित था।

पत्नी ने युवक को उठाने के लिए कहा- बेटा उठ जाग, तेरे पिता आए हैं। युवक उठकर जैसे ही पिता को प्रणाम करने झुका माथे की पगड़ी पैरों में गिर गई। उसके लम्बे बाल बिखर गए।

सेठ की पत्नी ने कहा- स्वामी ये आपकी बेटी है। पिता के बिना इसके मान को कोई आंच न आए इसलिए मैंने इसे बचपन से पुत्र के समान ही पालन पोषण और संस्कार दिए हैं।

यह सुनकर सेठ की आँखों से अश्रुधारा बह निकली। पत्नी और बेटी को गले लगाकर सोचने लगा कि यदि आज मैने उस ज्ञानसूत्र को नहीं अपनाया होता तो जल्दबाजी में कितना अनर्थ हो जाता। मेरे ही हाथों मेरा निर्दोष परिवार खत्म हो जाता।

ज्ञान का यह सूत्र उस दिन तो मुझे बेहद महंगा लग रहा था लेकिन ऐसे सूत्र के लिए तो 500 स्वर्ण मुद्राएं बहुत कम हैं।

'ज्ञान तो अनमोल है।'

इस कहानी का सार यह है कि जीवन के दो मिनट, जो दुःखों से बचाकर सुख की बरसात कर सकते हैं।

डेंगू बुखार का शत-प्रतिशत प्रभावी उपाय

1.	**गिलोय घनवटी**	: 2-2 गोली - सुबह शाम
2.	**पपीते के पत्ते का ताजा रस**	: 1 कप
	गेहूं के ज्वारे का रस	: 1/2 कप
	पंचतुलसी अर्क	: 2 बूंद
3.	**हरसिंगार के पत्ते का क्वाथ**	: प्रत्येक घंटे 3-4 चम्मच
4.	**दालचीनी (चूसने के लिये)**	: दिन में 2-3 बार

हरसिंगार के पत्ते का क्वाथ बनाने की विधि

10 हरसिंगार के पत्ते, 8 काली मिर्च, 5-7 तुलसी पत्ते

सभी को 1 लीटर पानी में धीमी आंच पर पकायें। पानी 1/4 बचने बचने पर छानकर रखें। इसी क्वाथ को प्रत्येक घंटे पर 3-4 चम्मच पिलायें।

हरि प्रकाश राठी के कहानी संग्रह 'अगोचर' से साभार

पशु मानव

कादिर भाई, पॉकिटमार के सितारे इन दिनों ठीक नहीं थे। पिछले पाँच रोज से कोई आमदनी नहीं हुई, एक भी जेब पर हाथ नहीं मार सके। सब दिन होत न एक समान। वैसे उनकी अंगुलियों का कमाल कम नहीं था, अच्छी-अच्छी जगह उन्होंने पर्स मारे थे। रेलवे स्टेशन, सिनेमाघर, मन्दिर, बारात, मेले एवं कई भीड़ भरी जगहों में कादिर भाई की अँगुलियों ने जौहर दिखाए थे।

उनके साहस, धैर्य, चातुर्य एवं कौशल की जितनी तारीफ की जाए, कम होगी। चोरी करना बुजदिलों एवं बेवकूफों का काम नहीं है। बहुत जुगत भिड़ानी पड़ती है। भेड़ की खाल में भेड़िया होना कोई सरल कार्य नहीं है। अमावस्या की घनी अंधियारी रातों में भी चोर के मन में चाँदनी होती है। जब सब सोते है, चोर जागता है। जब सब मस्ती में होते हैं, चोर अपनी चुस्ती दिखाता है। सैकड़ों सावधान लोगों के बीच में चोर एक असावधान को ढूंढ लेता है। बड़े-बड़े राजे-महाराजे एवं पुलिस वाले भी जब चोरों से नहीं बच पाते तो सामान्य आदमी की बिसात ही क्या है तभी तो चोरी चौसठ प्रतिष्ठित कलाओं में एक है। सामाजिक एवं नैतिक स्तर पर चोरी का दर्जा कितना ही निम्नतर क्यों न हो, कलात्मक स्तर पर तो इसकी गिनती अन्य कलाओं के बराबर ही है।

कई ऐसे वाकये सुनने में आते हैं जहां चोरों के अद्भुत कौशल से मुग्ध होकर राजाओं ने उन्हें पुरस्कृत किया। कहते हैं उदयपुर रियासत में एक ऐसा चोर था जो छिपकली की तरह सीधी दीवार चढ़ लेता था। उदयपुर महाराणा ने पकड़े जाने पर उसे पुरस्कृत किया। जयपुर के महाराजा ने

एक प्रसिद्ध चोर को अपना पहरेदार बनाया था। चोरी कोई हँसी खेल नहीं है. साहस एवं कौशल के लिए सम्मान रखने वाले हर व्यक्ति के दिल में चोरों के लिए भी कहीं सम्मान होता है।

पिछले माह रावण दहन के समय, जब सत्य की असत्य पर जयकारों का निनाद हो रहा था, कादिर भाई ने एक रामभक्त महाजन का पर्स ऐसी मुस्तैदी से मारा कि रामभक्त को हवा भी न लगी। पर्स में सौ-सौ के पूरे दस नोट थे। घर जाकर रामभक्त महाजन ने मन-ही-मन एक बार %जय रावण अवश्य कहा होगा कादिर भाई जैसे लोगों ने ही रावण जैसे महा पण्डित असुर को शाश्वत एवं सनातन बनाया है। उन्हीं जैसे लोग राम को हर युग में जगाये रखते हैं।

कादिर भाई ने बाल धूप में सफेद नहीं किए हैं पैंतालीस वर्ष की उम्र में पिछले पच्चीस सालों से जेब काटने का लम्बा अनुभव है। खुदा नजर न लगाए, अब तक एक बार भी नहीं पकड़े गए। इतनी अच्छी रिपोर्ट तो शातिर चोरों की भी नहीं होती। इसीलिए नौसिखिये पॉकिटमार उन्हें उस्ताद मानते हैं।

पतला लम्बा मुँह, दाँये गाल पर काला बड़ा तिल, कोयल-सी मीठी बोली, छोटी-छोटी तीखी नुकीली मूंछें, लोमड़ी-सी आँखें, गले में बंधा रुमाल एवं सर पर जालीदार टोपी तथा रंगे सियार-सी चाल, मजाल कोई उन्हें चोर समझे। पर सौभाग्य सदैव साथ नहीं रहता, गत दस दिनों से खाली भटक रहे हैं। भावी प्रबल है।

कादिर भाई अब पुराने चिर-परिचित स्थानों से उकता गए थे आज सुबह से पब्लिक पार्क में घूम रहे थे, नई आजमाइश के मूड में थे। पब्लिक पार्क में बाँयी तरफ शहर का प्रसिद्ध चिड़ियाघर था एवं दाँयी तरफ अजायबघर। चिड़ियाघर में शेर, चीते, भालू, बंदर तथा अन्य कई जानवरों एवं पशु - पक्षियों के पिंजरे थे। जेठ का महीना था, पिंजरे तप रहे थे अतः कोई खास भीड़ नहीं थी। यहां वहां इक्का-दुक्का आदमी नजर आता था। कादिर भाई खड़े-खड़े सोच रहे थे कोई जानवरों को देखने में व्यस्त हो तो हाथ साफ करुं। अँगुलियाँ कई दिनों से जौहर दिखाने को तरस रही थी। अभी वो शेर के पिंजरे के आस-पास घूम रहे थे। गिद्ध की आँख बहुत दूर तक देखती है ।

(2)

रामबाबू शर्मा की उम्र अब पचास के पार होगी सर पर बाल काले कम और सफेद ज्यादा हैं। गालों पर दस्तक देती हल्की झुर्रियाँ, आँखों के नीचे हल्के काले गड्ढे एवं चश्मे का मोटा काँच बताते हैं कि बुढ़ापा अब द्वार पर ही खड़ा है। गत पच्चीस वर्षों से चिड़ियाघर में इलेक्ट्रीशियन का काम कर रहे हैं। जानवरों के पिंजरे में बिजली, पंखे, कूलर ठीक रखने की जिम्मेदारी इन्हीं की है। ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता बिरले ही होते हैं। कार्य जिनकी पूजा हो एवं ईमानदारी पूँजी, शर्माजी की गिनती ऐसे ही लोगों में है। शर्माजी अपना काम इतनी मुस्तैदी से करते थे कि सर्वत्र उनकी

सराहना होती। चिड़ियाघर की सुरक्षा व्यवस्थाओं से वे भली भाँति परिचित थे। किस तरह पक्षियों, जानवरों से पेश आना है, खतरनाक जानवर जैसे शेर, चीते, भालू आदि के पिंजरे किस तरह कार्य प्रारंभ करने के पहले लीवर खींच कर बीच में से बंद करने हैं आदि-आदि। हिंसक जानवरों के पिंजरे के बीच एक छोटा पिंजरा होता है जिसे काम करने के पहले बंद करना जरूरी होता है ताकि जानवर पिंजरे के एक तरफ रह सके। सारे इलेक्ट्रिक स्विच आदि दूसरी तरफ लगे होते हैं। इन सुरक्षा तरीकों से अब तक वो अभ्यस्त हो चुके थे। निस्संकोच पिंजरों में आते-जाते थे, कभी कोई दुर्घटना नहीं हुई।

रोजमर्रा के काम करते करते आदमी में एक विशिष्ट तरह का आत्मविश्वास आ जाता है। शेर के पिंजरे में मांस डालने वाला आदमी शेर की दहाड़ से नहीं डरता। जो कार्य जीवन का हिस्सा बन जाते हैं उनसे डर कैसा?

आज शर्माजी को शेर के पिंजरे का कूलर ठीक करना था। गत दो वर्ष से इसी शेर के पिंजरे में वो कई बार बिजली का कार्य देखने आ चुके थे। वैसे शर्माजी अक्सर प्रसन्नचित्त नजर आते पर आज वे अन्यमनस्क थे। कल शाम ही उनके बेटे गौरव का सीढ़ियों से उतरते हुए पाँव फिसल गया था। गिरते ही वह जोर से चीखा। टखने में जोर की लगी थी हालांकि कोई फ्रेक्चर नहीं था फिर भी डॉक्टर ने सावधानी के तौर पर कच्चा प्लास्टर लगा दिया था। रात होते वापस घर भी ले आए थे।

आज सुबह वह घर से निकले तब गौरव कराह रहा था । डॉक्टर ने कहा भी था दो-चार रोज दर्द रहेगा । गौरव उनका इकलौता बेटा था, शर्माजी उसे बेहद प्यार करते थे। आज घर से निकलते समय उन्होंने बेटे को नई जीन्स की पेंट एवं टी-शर्ट लाने का वायदा किया था। पिता के वादे ने उसके दर्द पर मरहम का असर किया, आँखों में चमक आ गई। शर्माजी ने पर्स पन्द्रह सौ रुपये रखे, पर्स बैक पॉकेट में रखा एवं चिड़ियाघर की राह ली, सोचा वापस आते हुए तसल्ली से खरीद लेंगे।

शेर के पिंजरे वाले कूलर को ठीक करना आज जरूरी था। अधीक्षक ने उन्हें देखते ही कहा- 'सारी रात शेर दहाडता रहा! आज उसके खाने के समय से पहले कूलर ठीक कर दो। कल शाम भी उसने गर्मी के मारे मांस छोड़ दिया। कल भी कूलर बन्द थे।'

शर्माजी ने शेर के पिंजरे के कोने वाला छोटा दरवाजा चाबी से खोला. तुरन्त वापस अन्दर से बन्द किया एवं सीधे कूलर के पास आ गए। बच्चे की चोट को लेकर मन उदास था, आज बीच का लीवर खींचना ही भूल गए, बेधड़क अन्दर आकर कूलर ठीक करने लगे।

एकाएक उन्हें ध्यान आया कि आज वह लीवर खींचना भूल गए हैं । लीवर खींचने से शेर के पिंजरे के बीच एक छोटा पिंजरा बंद हो जाता था ताकि काम आसानी से किया जा सके। अक्ल पर पर्दा पड़ गया, बच्चे के तनाव में भेजा घूम गया। उनका कलेजा धक-धक करने लगा जैसे पैरों तले जमीन सरक रही हो। दम खुश्क होने लगा जैसे छाती फट रही हो। भावी की कल्पना से ही वो दिल थाम कर रह गए ।

दबे पाँव वह पुनः दरवाजा खोलने को बढ़े ही थे कि उनकी ऊपर की सांस ऊपर व नीचे की नीचे रह गई। शेर अब तक बीच वाले खुले पिंजरे से उनके पिंजरे में प्रविष्ट कर चुका था। शर्माजी चुपचाप वहीं सहम गए। पैरों में आगे बढ़ने की शक्ति ही नहीं रही, खून सर्द हो गया, सारी क्रिया शक्ति ही लुप्त हो गई। मृत्यु धीरे-धीरे उनकी ओर आ रही थी।

भागने का अर्थ मृत्यु सुनिश्चित थी। वो भय से थरथराने लगे, सारा शरीर पीपल के पत्ते की तरह कापने लगा कोई उपाय न देखकर वह कूलर ठीक करने में लग गए। उन्हें मालूम था शेर भूखा है एवं आज मौत निश्चित है। उनके कमरे में शेर नहीं यमराज ही घुसा था। हाथ-पाँव, पिण्डलियाँ भय से काँप रहे थे। हे राम! आज बचा लो, पीछे परिवार का क्या होगा। शेर की तरफ देखने की तो उनकी हिम्मत ही नहीं थी शुतुरमुर्ग की तरह उन्होंने अपना ध्यान कूलर में व्यस्त किया पर ज्यों-ज्यों शेर उनके करीब आता गया उन्हें लगा मृत्यु करीब आती जा रही है। जान सुई की नोक पर थी। आज वहां खड़ा होना अंगारों पर खड़ा होने जैसा था। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। आँखों आगे अँधेरी आने लगी थी। इधर कुआँ उधर खाई वाली हालत थी। आत्मरक्षा का अन्तिम हथियार स्क्रू ड्राइवर था, सोच रहे थे शेर के हमला करते ही उसकी आँख में घुसेड दूंगा, शायद घायल होकर भाग जाए। पर यह सोच मात्र मन बहलाने की असफल चेष्टा के अतिरिक्त कुछ न था। शेर का एक पंजा उनके अंजर पंजर ढीले कर सकता था।

शेर शर्माजी के करीब आया, और करीब आया, यहाँ तक की उनके पास आकर खड़ा हो गया। शर्माजी ऊपर से नीचे पसीने से तरबतर हो गए जैसे प्राण कुछ पल के लिए ही रह गए हों। बदन बर्फ की तरह ठण्डा पड़ गया। चेहरा ऐसे मुरझा गया जैसे संध्या के समय कमल। शेर अब भी खड़ा था। वे चोर आँखों से कभी शेर को देखते तो कभी स्क्रू ड्राइवर हाथ में लिये कूलर को। भीगी बिल्ली की तरह उनका शरीर काँप रहा था। मन-

ही-मन जल्दी-जल्दी हनुमान चालीसा पढ़े जा रहे थे, 'हे बजरंग बली! आज इस बला को टाल दो, आपकी सवामणी करूंगा।' उन्होंने जीवन में भी नहीं सोचा था कि उनके साथ ऐसा दर्दनाक एवं खौफनाक हादसा होगा। चिड़ियाघर में काम करने के लम्बे अनुभव से उन्हें मालूम था कि भूखा शेर किसी का सगा नहीं होता इस विप्लवकारी विचार के आते ही उनके हाथ-पाँव फूल गए। उनके रुधिर एवं हृदय की दुःसह जलन का बयान नहीं किया जा सकता। उन्हें लगा जैसे उनकी कमर टूट रही है शेर उन्हें छोड़ने वाला नहीं, आज कुर्बानी निश्चित है।

आश्चर्य! शेर ने मुँह झुकाकर शर्माजी को सूंघा एवं धीरे-धीरे अपनी जीभ से उनके तलवे चाटने लगा। जैसे कह रहा हो, 'आप इतने दिनों से मेरा पिंजरा ठंडा कर रहे हो, इन प्रचण्ड गर्मियों में मुझे कितना सुकून मिलता है। कल क्या नाराज हो गए थे? कोई बात नहीं! आज ठीक कर दीजिए। कल गर्मी ने मेरे प्राण ले लिए थे, मैं शाम खाना भी नहीं खा सका। आप अकारण ही इतना भयभीत हो रहे हो। हम पशु भले सही पर कृतघ्न नहीं है। आपका उपकार अविस्मरणीय है।' स्वाभाविक प्रेम एवं अनुराग से भरे जानवर क्या-क्या नहीं समझ लेते।

[3]

पिंजरे के बाहर खड़ा कादिर भाई यह सब नजारा देख रहा था। उसके शातिर दिमाग ने यह अनुमान लगा लिया कि आज शर्माजी फँस गए हैं, पर वह यह सोचकर चुप रहा कि चिल्लाने से जानवर बिगड़ सकता है। वंचक अपनी गणित लगा रहा था।

कृतज्ञता प्रगट करके शेर पुनः अन्दर के पिंजरे में चला गया। शर्माजी बदहवाश पिजरे से बाहर आए। जान बची लाखों पाए। मानो मुर्दे को प्राण मिल गए हो। ऐसे छूटे जैसे जन्म का दरिद्र खजाना पा गया हो। बाहर आकर पारे की तरह बिखर गए। उन्हें मूर्छा आने को ही थी।

बाहर खड़े कादिर भाई ने उन्हें सहारा दिया। वह कादिर भाई को जानते तक नहीं थे, पर उससे बेतहाशा ऐसे लिपटे जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिला हो। इस भीषण विपत्ति में कादिर भाई ही उन्हें प्रथम अवलम्ब लगा।

धीरे-धीरे शर्माजी शांत हुए। अब वह एक पल भी यहां नहीं रुकना चाहते थे। उन्होंने सीधा स्कूटर उठाया एवं घर की राह ली। बच्चे के कपड़े खरीदने का विचार धरा रह गया।

घर उन्हें कपड़े बदलते वक्त पता चला कि उनका पर्स गायब था।

विधवा सहायता

★ **श्री पदम चन्द जी जैन,** एडवोकेट, मुरैना ने विधवा सहायता हेतु रु. 5,100/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5009)*

★ **श्री ज्ञानचन्द जी जैन,** ए-2, जैन मन्दिर रोड, मोहन नगर, हिण्डौन सिटी ने अपनी पत्नी स्व. श्रीमती गीता जैन की पंचम पुण्यतिथि (10.10.2021) पर उनकी स्मृति में विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5010)*

★ **श्री महिन्दर कुमार जी जैन,** 19, नव ज्योति कॉलोनी, न्यू शिवपुरी रोड, बीकानेर-334003 ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5011)*

★ **श्री नीरज जी जैन,** ई-23, गांधी नगर, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 11,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5012)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन एवं श्री पंकज जी जैन,** 12-रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 7,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5013)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन एवं श्री पंकज जी जैन,** 12-रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 4,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5014)*

★ **श्री सुभाष चन्द्र जी अनुराज जी जैन** (महावीरजी वाले), दुर्गा नगर, फिरेजाबाद ने विधवा सहायता हेतु रु. 5,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5015)*

★ **श्रीमती चन्द्रप्रभा जी जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री नवीन चन्द जी जैन (श्री संजीव जैन शाखा अध्यक्ष अ.भा.प. जैन महासभा, शाखा फिरोजाबाद) ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5016)*

★ **श्री विमल चन्द जी जैन** (रैता वाले) फिरोजाबाद ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5017)*

★ **श्री अनिल कुमार जी जैन एवं श्रीमती हेमलता जी जैन,** डी-197, मोती पारकी पार्क, बापू मार्ग, जयपुर-302015 ने विधवा सहायता हेतु रु. 50,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5018)*

★ **श्रीमती नीरू जी जैन** धर्मपत्नी श्री रविन्द्र कुमार जी जैन, 17/661, चोपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर ने सेवानिवृत्ति पर विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5019)*

★ **श्री धनेश जी जैन, देवेश जी जैन** रूप नगर-प्रथम, अर्जुन नगर अण्डरपास के पास, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 3,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4921)*

षष्ठम पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

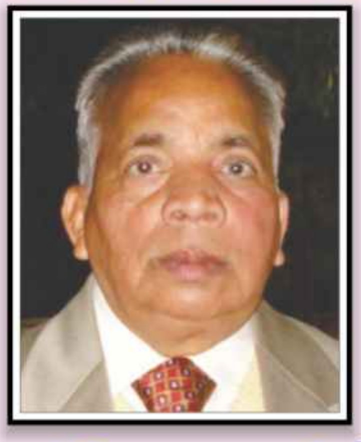

स्व. श्री विमल चन्द जी जैन

(प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय - से.नि., आगरा निवासी)

(जन्म : 06.09.1939 - स्वर्गवास : 25.11.2015)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना, धर्म के प्रति आस्था एवं प्रेरणादायक चरित्र हमारी स्मृति में सदा रहेगा एवं सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा। हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती संतोष जैन *(पत्नी)*

पुत्र-पुत्रवधु :
डॉ. पवन कुमार जैन-भारती जैन
कमल जैन-वर्षा जैन
पंकज जैन-दिव्या जैन

पौत्र, पौत्री :
आयुषी, दिव्यांश, हिमांशु,
कार्तिक, आन्या

पुत्री-दामाद :
सीमा जैन-अरूण जैन
अनिता जैन-राजेश सेठ
डिम्पल जैन-रवीश जैन

धेवते, धेवती :
आकांक्षा-नमन,
स्वपनिका, करण,
कुनाल, सूर्यांश, शौर्य

समस्त सलावदिया परिवार

निवास : 8-9-152, धातु नगर, कंचनबाग, हैदराबाद
मोबाईल : 9849446456, 9849302009, 9810204976

Cargomen™ LOGISTICS (INDIA) PVT. LTD. Your Trusted Logistics Partner

TMEN SYSTEMS PVT. LTD.

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती रामश्री जी जैन

(स्वर्गवास : 19 सितम्बर 2021)

(धर्मपत्नी स्व. श्री रामचरण लाल जी जैन)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सुअनुशासन, प्रेरणास्पद मार्गदर्शनव सेवाभाव हमें सदैव स्मरणीय रहेगा, हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
शिखरचन्द-मनीषा
पारस-बेबी
रिषभ-ऊषा
बृजेश-रेनु
श्रेयांश-सीनम

पौत्र-पौत्रवधु :
अंकित-भूमिका

प्रपौत्र :
पुर्विक

पौत्र, पौत्री :
प्रंकुल, सौरभ, अनुज, प्रफुल, दीपेश, सम्यक, आदित्य, निर्भय, श्रेजल, मिनी, पाखी

प्रतिष्ठान :
शिखर ऑयल मिल, मोहना
पारस किराना स्टोर, मोहना
सम्यक ऑयल मिल, मोहना
विपिन जनरल स्टोर, मोहना
जैन रेडिमेड, मोहना
सौरभ इन्टरप्राइजेज, मोहना
वर्धमान इन्टरप्राइजेज, मोहना

पुत्री-दामाद :
आशा-राजेन्द्र जी
सुमन-महेश जी
किरन-प्रकाश जी
लक्ष्मी-अनिल जी
माया-मुकेश जी
सरोज-मुकेश जी
अभिलाषा-शान्तिचन्द जी
नेहा-विवेक जी

निवास : *शिखरचन्द पारस कुमार जैन*
सदर बाजार, मोहना, जिला ग्वालियर-475330 (म.प्र.)

भावभीनी श्रद्धांजलि

द्वितीय पुण्यतिथि

स्व. डॉ. रज्जन सिंह जी जैन

(10.06.1934 - 06.10.2021)

बड़ी रौनकें होंगी आज ईश्वर के दरबार में
एक फरिश्ता पहुंचा है, पृथ्वी लोक से उनके संसार में।

स्व. कु. प्रतिष्ठा जैन

(15.03.1998 - 21.10.2019)

दुनिया भर के नजारें यहां, फिर भी तेरी ओर नज़र
तू रहेगी किसी भी गली, देती रहेंगी हवाऐं खबर।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
विनोद कुमार जैन-विनिता जैन
ऋषभ कुमार जैन-बीना जैन
पुत्री-दामाद :
विमलेश जैन-ओमकार जैन
डॉ. रेखा जैन-डॉ. अतुल जैन
पौत्र, पौत्री :
प्रियम जैन, मेघा जैन,
खुशी जैन, काव्य जैन,
विदुषी जैन, आयुषी जैन,
अक्षत जैन, अणिमा जैन

ताऊजी-ताईजी :
विनोद कुमार जैन-विनिता जैन
पापा-मम्मी :
ऋषभ कुमार जैन-बीना जैन
बुआजी-फूफाजी :
विमलेश जैन-ओमकार जैन
डॉ. रेखा जैन-डॉ. अतुल जैन
भाई, बहन :
प्रियम जैन, मेघा जैन, खुशी जैन,
काव्य जैन, विदुषी जैन, आयुषी जैन,
अक्षत जैन, अणिमा जैन

निवास : 43/204, जैन गली, सिकन्दरा, आगरा, मो.: 9897263951, 8887798128

पंचम पुण्यतिथि

स्व. श्रीमती कुसुम देवी जी जैन

(15.10.1947 - 07.11.2016)

(मूल निवासी-वैर, भरतपुर)

श्रद्धासुमन अर्पित

पी.सी. जैन (पति)

(सेवानिवृत प्राचार्य)

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
तरूण कुमार जैन-सुमित्रा जैन
राजीव जैन-दीपमाला जैन

पुत्री-दामाद :
राजश्री जैन-सुभाष जैन
मंजूश्री जैन-राजेन्द्र जैन
मालाश्री जैन-डॉ. प्रदीप जैन

पौत्र, पौत्री :
हर्ष, प्रगति, बुलबुल, ईशान

दोहिता, दोहिती :
नेहा, शुभम, यश, लीना, चेतन, मोहित

पीहर पक्ष :
धर्मचंद जैन-अंगूरी देवी
त्रिलोक चंद जैन
रमेश चंद जैन
विजय कुमार जैन
एवं समस्त धाती परिवार (बोंल वाले)

देवर-देवरानी :
कैलाश चन्द जैन-राजुल जैन
सुरेश चन्द जैन-मंजूलता जैन

ननद-ननदेउ :
कौशल जैन-सुरेश चन्द जैन

-: प्रतिष्ठान :-

वैज्ञानिक दृष्टिकोण
123/83, मानसरोवर,
जयपुर-302020

केयरडील फार्मा
एस-1, स्वास्तिक अपार्टमेंट, बी-25,
गंगा-जमुना कॉलोनी, मुरलीपुरा, जयपुर-39

फोनः 0141-2786253, 9414072893, 9414052453, 9414066864

सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।

वर की तलाश

★ **अंकिता जैन** पुत्री श्री सुरेश चन्द जैन (पहाड़ी वाले भरतपुर), जन्मतिथि 27.10.1999 (प्रातः 11:41 बजे), कद- 5'-4'', शिक्षा- एम.ए. राजनैतिक शास्त्र, गौत्र : स्वयं- बडवासिया, मामा- चौधरी, सम्पर्क : 11, श्रीनाथ नगर, श्योपुर, सांगानेर, जयपुर, मो.: 9829226665, 9166330088, 8058345473 *(अगस्त)*

★ **निकिता जैन** पुत्री श्री राजेश कुमार जैन, जन्मतिथि 20.08.1999 (प्रातः 09:15 बजे, जयपुर), कद- 5'-5'', शिक्षा- एम.ए. इतिहास, गौत्र : स्वयं- अठवरसिया, मामा- चौधरी, सम्पर्क : बी-108, अशोक विहार विस्तार, गोपालपुरा बाई पास, जयपुर-302018, मो.: 9672357285, 9414055855 *(सितम्बर)*

★ **शुचि जैन** पुत्री श्री मुकेश चन्द जैन, जन्मतिथि 17.08.1996, शिक्षा- एम.एस.सी., बी.एड., गौत्र : स्वयं- पावटिया, मामा- मस्तंगडंग्या चौधरी, सम्पर्क : शिव स्कूल वाली गली, जैन कॉलोनी, खेरली, अलवर, मो.: 9414321710 *(सितम्बर)*

★ **Prachi Jain** D/o Late Sh. Sanjay Kumar Jain (Nowgaon, Alwar), DoB 11.11.1995 (at 7:05 am, Alwar), Height 5'-3.5", Education- B.Tech in ECE, Working in Bangalore based MNC, Package : 14 LPA, Gotra : Self- Nageshwaria, Mama- Janothariya, Contact : Ekta Jain, Jaipur, Mob.: 9462229831, Email : ektajain1972@gmail.com *(Aug.)*

★ **Vidhi Jain** (Anshik Manglik) D/O Sh. Anil Kumar Jain, DoB 02.11.1993 (7:40 am, Jaipur), Height 5'-1", Education- B.E. (EC) Indore, Working at Pune, Package- 11 LPA, Gotra : Self- Chandpuria, Mama- Nangeswariya, Contact : Anil Kumar Jain, Mob.: 9926063720 *(Aug.)*

★ **Neha Jain** D/o Sh. Mohitash Jain, DoB 03.01.2000 (at 12:25 pm, Agra), Height- 5'-3", Fair Complexion, Education M.Sc. (Previous), CCC (Computer Course), Gotra : Self- Kher, Mama- Januthraia, Contact : Sector 7, 537, Avas Vikas Colony, Bodla, Agra, Mob.: 9837314626, 9358980224, 9368728827 *(Aug.)*

★ **Ritu Jain** D/o Sh. Santosh Jain, DoB 29.04.1991 (at 12:30 AM), Height 5'-2:, Fair Colour, Education M.A. (Hindi), Practicing of Stenography, preparing for Govt. Job, Gotra : Self- Baderiya, Mama- Badwasiya, Contact : E-269, Mansarovar Colony, Kala Kuan, Alwar (Raj.), Mob.: 8104423381, 8209718443 *(Aug.)*

★ **Amisha Jain** (Anshik Manglik) D/o Sh. Kamal Kumar Jain, DoB 10.07.1997 (at 1:56 pm), Height- 5'-3", Education- B.Com, MBA, Job- HDFC Mutual Fund, Gotra : Self- Thakuriya, Mama- Chodha Parivaar, Contact : 103, Chhotti Chhapeti, Firozabad- 283203, Mob.: 7351568144, 7830641569 *(Sep.)*

★ **Megha Jain** D/o Sh. Pradeep Kumar Jain, DoB 20.04.1997 (at 8:15 pm, Agra), Height- 5'-2", Education- BBA, MBA (HR and Finance), Occupation- HR Executive, Gotra : Self- Baderiya, Mama- Nehoniya, Contact : Sh. Pradeep Kumar Jain, Mob.: 9412262871 *(Sep.)*

★ **Sonakshi Jain** D/o Sh. Yogesh Kumar Jain, DoB 27.03.1993 (at 07:04 AM, Agra), Height 5'-4", Education- B.Tech. in Electrical and Electronics from Shiv Nadar University and MBA in Finance from USMS, Currently Working with Tata Power, Delhi Distribution Limited as Manager, Package- 10.5 LPA, Gotra : Self- Baderia, Mama- Chaudhhary, Contact : 7060928794, 9634081372 *(Sep.)*

★ **Pragati Jain** D/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 25.03.1998, Education- B.Tech. (Computer Science), Working in a Reputed Company, Package 6 LPA, Gotra : Self- Bhavariya, Mama- Chaudhary, Contact : Sh. Prakash Chand Jain, Abhay Vidya Mandir, Kherli, Mob.: 9414 638456,

890 5469824 *(Sep.)*

★ **Shaina Jain** (Manglik, Divorcee) D/o Sh. Shital Prasad Jain, DoB 11.03.1992 (at 6:22 a.m., Alwar), Height 5'-4", Education- BBA, MBA, PGDCA, Working at HDFC Bank New Delhi, Gotra : Sangarwasia, Contact : Sh. Shital Prasad Jain, Raj Nagar Part-2, Palam Colony, New Delhi, Mob.: 9354830171, 9560649574, 9899076686 *(Sep.)*

★ **Yashika Jain** D/o Sh. Yogesh Kr. Jain, DoB 01.07.1996 (at 07:13 pm, Alwar), Height 5'-3", Fair Color, Education- B.Com, M.Com, MBA Pursuing, Occupation- Presently Working with Indusind Bank, Jaipur, Gotra : Self- Rajeshwari, Mama- Choudhary, Contact : Near Jain Mandir, Main Market, Ramgarh, Alwar-301026, Mob.: 9602478710 *(Sep.)*

★ **Monika Jain** D/o Sh. Teekam Chand Jain, DoB 13.08.1997 (at 06:45 AM, Gahnoli, Mahwa, Dist. Dausa), Height 5'-2.5", Fair Complexion, Education- M.A. (Geography), Pursuing B.Ed., M.Ed. Final year, Gotra : Self- Baroliya, Mama- Bahattariya, Contact : VPO Gahnoli, Teh. Mahwa, Dist. Dausa (Raj.), Mob.: 9783522066, 9549836811, Email : jain.vipul052@gmail.com *(Sep.)*

★ **Deeksha Jain** (Anshik Manglik) D/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 07.08.1993 (at 10:15 am, Agra), Height- 5'-4", Education- B.Com., M.B.A., Job- Analyst in E.Y. Noida, Income- 6 LPa, Gotra : Self- Badaria, Mama- Chorbambar, Contact : 325, Jaipur House, Agra-02, Mob.: 9997039641, Ph.: 0562-4031148 *(Sep.)*

★ **Dr. Namita Jain** D/o Sh. Pradeep Kumar Jain, DoB 28.10.1992 (at 6:45 am, Gangapur City), Fair Color, Height 5'-1'', Education- M.Sc. Biotechnology from Mohanlal Sukhadia University, Udaipur and Pursuing NDDY (Diploma in Naturopathy and Yoga) Course. Currently Working as a Lab Assistant in a FMCG Company at Jaipur as well as also preparing for Govt. Exams., Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Chaudhary, Contact : 9875164685, 8104074480, 9667428428, Email : kiran.telecom80@ gmail.com *(Sep.)*

★ **Megha Jain** D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 02.04.1996 (at 2:20 pm), Fair Color, Height 5'-3'', Education- B.Tech. in Computer Science, Contact : Sh. Sunil Kumar Jain, Saras Dugdh Dairy Colony, Raniwara, Dist. Jalore, Mob.: 9460960622, 9001831835 *(Sep.)*

★ **Shweta Jain** D/o Late Sh. Subhash Chandra Jain, DoB 25.07.1993 (at 06:58 pm, Alwar), Height- 5'-3.5", Fair and Smart, Education- B.Tech (NIT Jalandhar), M.Tech (NIT Surathkal), Working in Ford Ahmedabad, 13.5 LPA, Gotra : Self- Ladodiya, Mama- Nangeswariya, Contact : Poornima Jain, Alwar, Mob.: 7597738470, Email : scjpar@gmail.com *(Oct.)*

★ **Kritika Jain** D/o Sh. N.K. Jain, DoB 20.09.1994 (at 7:22 am, Agra), Height 5'-1", Education- M.Com, Occupation- Working in Private Sector Company in Jaipur, Gorta : Self- Mahalishwari, Mama- Tak, Contact : G -4, Mangalyatan Apartments, Jain Mandir Road, Near Bal Mandir School, Kota Jn., Mob.: 8949654191 *(Oct.)*

★ **Anuradha Jain** D/o Sh. Mahaveer Prasad Jain, DoB 16.01.1994 (at 3:00 PM, Hindaun City, Karauli), Height 5'-1", Complexion- Fair, Education- M.A. & B.A., Gotra : Self- Pawatiya, Mama- Nangesuriya, Contact : 106-A, Raghunath Puri First, Pratap Nagar, Jaipur, Mob.: 9950250261, 9785546911, Email : manish1990jain@gmail.com *(Oct.)*

★ **Vidhi Jain** (Anshik Manglik) D/O Sh. Anil Jain, DoB 02.11.1993 (7:40 am, Jaipur), Height 5'-1", Smart and Wheatish, Education- B.E. (EC) Indore, Working in Hexaware at Pune, Package- 18.25 LPA, Gotra : Self- Chandpuria, Mama- Nangeswariya, Contact : Anil Kumar Jain, Mob.: 9926063720 *(Oct.)*

★ **Surbhi Jain** D/o Sh. Uttam Chand Jain, DoB 21.01.1996 (at 12:30am, Morena), Height- 5ft., Fair Complexion, Educational- B.Com, CA final (pursuing), Gotra : Self- Banjaare, Mama- Chandpuriya, Contact : A.B. Road, Banmore, Dist. Morena, Mob.: 7000016910, 9144676882 *(Oct.)*

★ **Karishma Jain** D/o Sh. Hemraj Jain, DoB 09.07.1994 (at Kherli), Height- 5'-2", Complexion- Very Fair, Education- B.A (D.U.), M.A., Gotra : Self- Choudhary, Mama- Nangaswariya, Contact : K-19/231, Ratiya Marg, Sangam Vihar, New Delhi-110062, Mob.: 9873197440 *(Oct.)*

★ **Akshita Jain** D/o Sh. Rajkumar Jain, DoB 15.12.1994 (at Joura, Morena), Height- 5Ft., Fair Complexion, Education- M.Com., Gotra : Self- Divariya, Mama- Banjare, Contact : Jain Mandir Gali, Pachbigha, Joura, Dist. Morena, Mob.: 9300790788, 9329875802 *(Oct.)*

★ **Mrinal Jain** D/o Sh. Bharat Bhushan Jain, DoB 09.08.1994 (at 09:20 AM, Palam, New Delhi), Height- 5'-1½", Fair Complexion, Education- M.Com. & M.B.A., Profession- Working in an MNC - Intercontinental Hotels' Group (IHG), Gurugram, Haryana (as Senior Analyst), Gotra : Self- Maleshwari, Mama- Barolia, Contact : H.No. WZ-246, Palam Village, New Delhi-110045 *(Oct.)*

वधू की तलाश

कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें

★ **अरूण जैन** पुत्र श्री सुरेश चन्द जैन (पहाड़ी वाले भरतपुर), जन्मतिथि 14.02.1996 (प्रातः 9:41 बजे), कद- 5'-6'', शिक्षा- सीनियर सैकेण्डरी व डिप्लोमा इन मेडिकल लेब्रोट्रिज, कार्यरत- स्वयं लेब्रोट्रीज कार्य 'पार्श्व डाइग्नोस्टिक सेन्टर', गौत्र : स्वयं- बडवासिया, मामा- चौधरी, सम्पर्क : 11, श्रीनाथ नगर, श्योपुर, सांगानेर, जयपुर, मो.: 9829226665, 9166330088, 8058345473 *(अगस्त)*

★ **गौरव जैन** पुत्र श्री सुभाष चन्द्र जैन, जन्मतिथि 20.03.1993 (रात्रि 12:17 मिनिट), कद- 5'-5'', शिक्षा- एम.ए. (संस्कृत), व्यवसाय- स्वयं का (जैन ट्रेडर्स होल सेल विक्रेता) शिवपुरी, आय- 1 लाख प्रति माह, सम्पर्क : सुभाष चन्द्र जैन, शिवपुरी, मो.: 9630528344 *(अगस्त)*

★ **सौरव जैन** पुत्र श्री सुभाष चन्द्र जैन, जन्मतिथि 14.04.1997 (सायं 6 बजे), कद- 5'-5'', शिक्षा- बी.कॉम., व्यवसाय- स्वयं का (जैन डिपार्टमेन्टल स्टोर, शान्ती नगर, शिवपुरी), सम्पर्क : सुभाष चन्द्र जैन, शिवपुरी, मो.: 9630528344 *(अगस्त)*

★ **विवेक जैन** (विधुर) पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, जन्मतिथि 28.08.1985, कद- 5'-8'', रंग गोरा, शिक्षा- बी.कॉम., व्यवसाय- स्वयं का (विवेक फ्लोर मिल, आगरा), गोत्र : स्वयं- जनूथरिया, मामा- धाती, सम्पर्क : 46/4ए/3ए, आवास विकरस कॉलोनी, बोदला, आगरा, मो.: *9897361262 (अगस्त)*

★ **रिषभ जैन** पुत्र श्री प्रदीप कुमार जैन, जन्मतिथि 13.05.1995 (प्रातः 6 बजे), कद- 5'-6'', शिक्षा- पी.जी.डी.एम.बी.ए. फाइनेन्स, कार्यरत- रिजनल क्रेडिट हेड- आई.डी.एफ.सी. बैंक जयपुर, गोत्र : स्वयं- जनुथरिया, मामा- चौरबम्बार, सम्पर्क : *9, भजन नगर, अजमेर रोड, ब्यावर, अजमेर, मो.: 9460312001, 9414866607 (अगस्त)*

★ **निलेश जैन** पुत्र श्री राजेश कुमार जैन, जन्मतिथि 06.10.1997 (दोपहर 02:04 बजे, जयपुर), कद- 5'-7'', शिक्षा- बी.टेक. (सी.एस.), जयपुर, कार्य- आई.टी. कम्पनी, गौत्र : स्वयं- अठवरसिया, मामा- चौधरी, सम्पर्क : बी-108, अशोक विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302018, मो.: 9672357285, 9414055855 *(सितम्बर)*

★ **सौरभ जैन** पुत्र श्री मुकेश चन्द जैन, जन्मतिथि 07.11.1993, कद- 5'-11'', शिक्षा- बी.टेक. (मैकेनिकल), व्यवसाय- वर्किंग स्ट्राईकर एज सप्लायर क्वालिटी एस्योरेंस स्पेसलिस्ट, गुड़गांव, वार्षिक आय- 10.5 लाख, गौत्र : स्वयं- पावटिया, मामा- मस्तंगडंग्या चौधरी, सम्पर्क : शिव स्कूल वाली गली, जैन कॉलोनी, खेरली, अलवर, मो.: 9414321710 *(सितम्बर)*

★ **समकित जैन** पुत्र श्री दीपक जैन, जन्मतिथि 30.08.1996 (सायं 5:55 बजे, राजगढ़, ब्यावरा), कद- 5'-8'', शिक्षा- बी.ई.- सिविल इंजिनियरिंग एक्रोपोलिस, इन्दौर, डी. फार्मा, व्यवसाय- स्वयं का बिजनेस, आय- 6 अंकों में, गौत्र : स्वयं- पल्लीवाल, मामा- राजोरिया, सम्पर्क : जय स्तंभ के सामने, राजगढ़, ब्यावरा, म.प्र., मो.: 9300960051, 9425334417 *(सितम्बर)*

★ **अंकित जैन** पुत्र श्री जवाहर लाल जैन, जन्मतिथि 22.11.1989 (प्रातः 8:32), कद 5'-1'', शिक्षा एमबीए, जॉब- एमिटी यूनिवर्सिटी मानेसर गुड़गांव, गोत्र : स्वयं- चांडपुरिया (पल्लीवाल), मामा- खलीदगिया, संपर्क : जगन विहार कॉलोनी, अछनेरा, आगरा, मो.: 9837316219, 7042064199 *(अक्टूबर)*

★ **रोहित जैन** (आंशिक मांगलिक) पुत्र स्व. श्री प्रमोद जैन, जन्मतिथि 28.03.1994 (रात्रि 11:50 बजे), कद 5'-7'', शिक्षा- बी.टेक (सी.एस.) गवरमेन्ट कॉलेज उदयपुर, कार्यरत- सीनियर सॉफ्टवेयर इंजीनियर- मेटाक्यूव सॉफ्टवेयर प्राईवेट लिमिटेड, जयपुर, व्यवसाय- भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड राजगढ़ (अलवर), भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड मौजपुर (अलवर), गोत्र : स्वयं-

चौरबम्बार, मामा- धाती, संपर्क : जैन पेट्रोल पम्प के पास, मालाखेड़ा रोड, लक्ष्मणगढ़, अलवर, मो.: 9414812360, 6350160386 *(अक्टूबर)*

★ **Prayansh Jain** S/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 27.02.1994 (at 8:10 PM, Alwar), Height 5'-8", Education- B.Tech. (JECRC Jaipur), Occupation- Software Engineer in Metacube Software Pvt. Ltd. Jaipur, Package- 7.5 LPA, Gotra : Self- Nageshwaria, Mama- Badwasia, Contact : Jain Tyres, 9, Bapu Bazar, Alwar, Mob.: 9829215414 *(Aug.)*

★ **Yogendra Jain** (Manglik) S/o Sh. Lokendra Jain, DoB 24.12.1992 (at 4:13 AM, Gailana Agra), Height 5'-10'', Education B.E. (E.C.), Job- Software Developer at Extra Marks Education India Pvt. Ltd., Salary- 7 LPA, Gotra : Self- Kashmiria, Mama- Lahdodiya, Contact : Ekta Nagar, Sagartal Road, Bahodapur, Gwalior, Mob.: 9584222795, 9179800986 *(Aug.)*

★ **Aditya Jain** S/o Late Sh. Sheetal Kumar Jain, DoB 25.12.1990 (at 1:00 AM, Agra), Height 5'-8", Education- B.Tech & PG Diploma in Banking, Occupation- Assistant Manager in Axis Bank, Income- 4.48 LPA, Gotra : Self- Bugala, Mama- Salavadia, Contact : House No. 150, Bhudara Bazar, Karauli, Rajasthan, Mob.: 9460913709, 9461455353, 9413886798, Email : adijain19@gmail.com *(Aug.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. T.C. Jain, DoB 04.01.1994, Gotra : Self- Athvarsiya, Mama- Baderya, Education- MCA, Job- Software Engineer at Neosoft Pune, Contact : 252, Patel Nagar, Muhuna Mandi Road, Jaipur, Mob.: 9001533497, 7014658129 *(Aug.)*

★ **Arpit Jain** S/o Sh. Narendra Kumar Jain, DoB 12.09.1992 (at 8:31 am, Jaipur), Height- 5'-7", Education- M.Tech. (NIT, Bhopal) & Pursuing P.H.D. IIT Hyderabad, Occuption- IC Layout Designor in Synopsys Hyderabad, Package- 28 LPA, Gotra : Self- Ladoriya, Mama- Bayaniya, Contact : Ward No. 7, Jain Colony, Kajodi Ka Mohalla, Kherli (Alwar), Mob.: 9413907815, Email : arpitkherli@gmail.com *(Aug.)*

★ **Anshul Jain** S/o Sh. Pushpendra Jain, DoB 14.03.1994 (at 9:12 AM, Agra), Height 5'-11", Education- B.Com., Occupation- Own Business, Gotra : Self- Salawadia, Mama- Maimuda, Contact : Jain Readymade and Book Store, Midhakur (Agra), Mob.: 9410006648, 8445463430 *(Aug.)*

★ **Pawan Jain** (Manglik) S/o Sh. Murari Lal Jain, DoB 16.12.1987, Height 5'-6", Education- B.A., Job- Contractor of Edu. Department in All Category, Gotra : Self- Mast Dangiya Choudhary, Mama- Rajoriya, Contact : Deewan House, Bada Bazar, Kaurali (Raj.), Permanent Address : 4/443 Kala Kuan Housing Board, Aravali Vihar, Alwar (Raj.), Mob.: 9982075473, 9887007334, Email : pawan4.jain@gmail.com *(Aug.)*

★ **Sudhir Jain** S/o Sh. Sumer Chand Jain, DoB 17.03.1988 (at Alwar), Height 5'-11", Education- M.Com., MBA, LLB, Occupation- Working in NBC Bearings, Jaipur (C.K. Birla Group), Gotra : Self- Sangarwasiya, Mama- Chaudhary, Contact : 213, Vivek Vihar, Scheme No. 10A, Distt. Alwar- 301001, Mob.: 9982154002 *(Aug.)*

★ **Atul Jain** S/o Sh. Sanjeev Kumar Jain, DoB 24.07.1995 (at 1:00AM, Kherli, Alwar), Height 5'-7", Education- B.Sc., MBA, Occupation- Working in Sun Pharma as M.R., Salary- 6.85 LPA, Gotra : Self- Bayaniya, Mama- Chorbambar, Contact : 87, Pratap Nagar, Kalware Road, Jhotwara, Jaipur-302012, Mob.: 9414446323, 9694635099 *(Aug.)*

★ **Chandra Prakash Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 09.03.1987 (at 11:50PM, Gwalior), Education- B.Com., ITI, Occupation- Business (Electrical Shop), Gotra : Self- Kotia, Mama- Maimuda, Contact : A-9, New Vivek Nagar, Behind Mela Ground, Thatipur, Gwalior, Mob.: 930999134, 9268731636, 7000626305 *(Aug.)*

★ **Aman Kumar Jain** S/o Late Sh. Akshay Kumar Jain, DoB 20.07.1993 (at 6:15PM, Ramgarh, Alwar), Height 5'-6", Education- BCA, LLB, Hardware & Networking Engineering Course from Jetking, Alwar, Occupation- Working as an Advocate in Ramgarh, District Court, Alwar, Income 3.50 LPA, Gotra : Self- Ved-Vairasthak, Mama- Chandpuriya, Contact : Kushal Chand jain, Chopra Bazar, Ramgarh, Alwar, Mob.: 9828063780, 9660546052, 8233470032, Email : aman92jain@gmail.com *(Aug.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Late Sh. Devendra Kumar Jain, DoB 21.09.1993 (at 12:55 PM, Alwar), Height 5'-10", Education- B.Tech. (EC), Occupation- Working in Havells, Alwar, Gotra : Self- Maleshwari, Mama- Chorambaar, Contact : 205, Scheme No. 1, Arya Nagar, Alwar, Mob.: 8000669150, Email : abhijain2109@gmail.com

(Aug.)

- ★ **Pallav Jain** S/o Sh. Pavan Kumar Jain, DoB 24.07.1993 (at Jaipur), Height 5'-6", Education- Post Graduate-COAC (Pune), B.Tech (CS), Occupation- Compliance Research Analyst, Pune, Package- 12 LPA, Gotra : Self- Salavadiya, Mama- Athvarsiya, Contact : 165/A, Patel Nagar, Iskon Road, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9414870136, 9414870134 *(Aug.)*
- ★ **Arihant Kumar Jain** (Divorcee) S/o Sh. Trilok Chand Jain, DoB 10.02.1987 (at 5:00 AM, Hindaun City), Height- 5'-11", Education- Diploma in Electrical, Job- (Govt. Job) Working as Technical Supervisor in Vidyut Bhawan, Jaipur, Package- Rs. 5.50 LPA, Gotra : Self- Chorbambar, Mama- Behtariya, Contact : Sh. Trilok Chand Jain, 744-A, Devi Nagar, Gali No. 7, Sodala, Jaipur, Mob.: 7597111709, 7976744739 *(Sep.)*
- ★ **Aditya Jain** S/o Sh. Uttam Jain, DoB 12.10.1990 (at 11:20 pm, Alwar), Height- 5'-6", Education- B.Tech (ECE) Jaipur, M.Tech (BITS Pilani), Occupation- Senior Software Engineer, WatchGuard Technologies, Noida, Package 16.76 LPA, Gotra : Self- Kashmeria, Mama- Choudhary, Contact : Janakpuri-II, Imali Phatak, Jaipur, Mob.: 9414405532 *(Sep.)*
- ★ **Abhay Jain** (Manglik) S/o Sh. Prakash Chandra Jain, DoB 20.11.1993 (at 7:25 am), Height 5'-11", B.Tech (Hons), Gotra : Self- Chorbhambar, Mama- Behtariya, Working in MNC Gurgaon as Senior Data Scientist, CTC 16 LPA, Contact : Meera Kunj, Mandawara Road, Jain Colony, Hindaun City, Mob.: 9024320476, 9667810819 *(Sep.)*
- ★ **Vinit Kumar Jain** S/o Sh. R.P. Jain, DoB 17.07.1989, Education- B.Tech (Machnical), Job- AM in RCDF, Plant at Nadbai, Gotra : Self- Ledoria, Mama-Athvarsiya, Contact : 846, Mukharji Nagar, Bharatpur, Mob.: 9413444164, 9414348915 *(Sep.)*
- ★ **Shubham Jain**, DoB 11.03.1996 (at 6:20 AM, Mandawar Dausa), Height 5'-4", Education- Graduation, Occupation : Business, Income 6 digit, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Borangdangiya, Contact : 77/167, Aravli Marg, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9694707058, 9414067972 *(Sep.)*
- ★ **Shubham Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 11.12.1992 (at 8:54 PM, Bharatpur), Height- 5'-7", Education- B.Tech (EC), Amity University, Jaipur, Occupation- Senior Software Engineer in Aggne Global IT Services Pvt. Ltd., Hyderabad, Package- 22 LPA, Gotra : Self- Divarya, Mama- Amiya, Contact : Sh. Rajendra Kumar Jain (Retd. CM, PNB), B-3, Ranjeet Nagar, Bharatpur, Mob.: 8452843745, 9414376416, Email : pnb.rkjain@gmail.com *(Sep.)*
- ★ **Divesh Jain** (Manglik) S/o Sh. Gian Chand Jain, DoB 29.06.1994 (at 6:15 PM), Height- 5'-3", Education- Post Graduate (MCA) IGNOU, Occupation- Senior IT Engineer at Taj Hotels Delhi, Gotra : Self- Mimunda, Mama- Vijeshwari, Contact : RZ E-58, Raj Nagar Part-2, Dada Dev Road, Palam, New Delhi-110077, Mob.: 9891394006, 9718869534 *(Sep.)*
- ★ **Ankur Jain** (Manglik) S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 31.07.1989 (at 6:50 pm, Agra), Height 5'-9", Education- Auto Eng., M.Sc. (Phy. 1st Div.), B.Ed., Occupation- Sr. Executive Technical Surveyor, ICICI Lumbard General Insurance, Income- 5 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Mob.: 9258065928, 9045216301 *(Sep.)*
- ★ **Ankur Jain** S/o Sh. Yogesh Kumar Jain, DoB 22.11.1989 (at 1:20 Noon), Height 5'-11", Education- B.Com, MA (English), B.Ed., Job Profile- Teaching, Salary- 9 LPA, Gotra : Kotia, Contact : 76, Dream City, Agra, Mob.: 9359306952, 9897672345 *(Sep.)*
- ★ **Jeetendra Jain** (Manglik) S/o Sh. Susheel Kumar Jain, DoB 28.07.1993 (at 2:20 PM, Hindaun City), Height-5'-7", Education- B.Com., M.Com., Profession- Jain E-Mitra & Photo State (Jaipur), Gotra : Self- Baloriya, Mama- Choudhary, Contact : Jain Electrical Store, New Mandi, Hindaun City-322230, Mob.: 9460628173, 9468841953 *(Sep.)*
- ★ **Chirag Jain** S/o Sh. Chandra Shekhar Jain, DoB 09.01.1995 (at 08:15 AM, Jaipur), Height 5'-7", Education- B.Tech in Mechanical Engg. & IOSH Certification, Job- Quality Engineer at Pee Tee Turners Ltd. (Pushp Group), Gotra : Self- Salawadiya, Mama- Bhadkoliya, Contact : Flat no. 102, Nakoda Tower, Binjari Marg, Dadi Ka Phatak, Jhothwara, Jaipur, Mob.: 9799434415, 8432244702 *(Sep.)*
- ★ **Sidhant Jain** S/o Sh. Hemant Kumar Jain, DoB 15.12.1993 (at 7:59 pm, Delhi), Height 5'-9", Education- B.Pharma (Delhi), MBA (Pharma), Occupation- Working with a Reputed Pharma

Co., Bombay, Gotra : Self- Barolia,Mama- Angras, Contact : Motibagh, New Delhi-21, Mob.: 9810190295, 9811428964, Email : hemantkumarjain@ymail.com *(Sep.)*

★ **Vipul Kumar Jain** S/o Sh. Tikam Chand Jain, DoB 08.06.1994 (at 10:05 PM, Gahnoli, Mahwa, Dist. Dausa), Height- : 5'-6.5", Fair Complexion, Education- B.Tech, Occupation- Junior Engineer, Bharat Sanchar Nigam Ltd., Ludhiana, Gotra : Self- Baroliya, Mama- Bahattariya, Contact : VPO. Gahnoli, Teh. Mahwa, Dist. Dausa, Mob.: 9783522066, 9414714742 *(Sep.)*

★ **Vivek Jain** S/o Late Sh. Laxmi Kant Jain, DoB 06.06.1980 (at 06:15 AM, Ashok Nagar, Guna), Height- : 6Ft., Education- B.A., Occupation- Sales Executive with Singhvi Foods Pvt. Ltd., Guna, Gotra : Self- Kashmiria, Mama- Badwasia, Contact : Ram Krishnapuran, Opp. Mool Singh Dadabhi Bagrangarh Road, Guna-473001, Mob.: 9993040010, 9399118890, 8989456378, Email : gopeshjain1975@ gmail.com *(Sep.)*

★ **Pawan Jain** S/o Late Sh. Brijendra Kumar Jain, DoB 18.07.1976, Education- B.A. (Computer Science), Occupation- Business (General & Provisional Store), Income- 40,000/-, Gotra : Self- Rajeshwari, Mama- Maleshwari, Contact : Sh. Yogesh Jain, In Front Jain Mandir, Ramgarh, Dist. Alwar, Mob.: 9602478710, 8949454678 *(Sep.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 01.05.1993, Height 5'-8", Education- B.Tech. (Electronic and Communication), Occupation- NPD & Process Head in Babas Electronics Industries Pvt. Ltd. Manesar, Gurgaon, Income- 10.8 LPA, Gotra : Self- MastakDangya Chaudhary, Mama- Gindodiya, Contact : Sh. Ramesh Chand Jain, Ward No. 5, Kajodi Mohalla, Kherli, Alwar-321606, Mob.: 9783062749, 9252920276 *(Sep.)*

★ **Mohit Jain** S/o Sh. Vimal Kumar Jain, DoB 20.03.1994 (at 06:12 am), Height 5'-5", Education- BCA, MCA, Occupation- Private Job in Manpower India Pvt. Ltd. and Client Side British telecom Grugram as IT Associate Engineer, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Vijeshwari, Contact : RZ-132\2, Street No. 4, Sadh Nagar, Palam Colony, New Delhi-110045, Mob.: 9818783172 *(Sep.)*

★ **Himanshu Jain** S/o Sh. Manoj Mohan Jain, DoB 08.06.1994 (at 11:55 am), Height 5'-7", Education- Chartered Accountant, BCOM, Occupation- Self Employed at Himanshu J & Associates, Belangaj, Agra, Gotra : Self- Chandpuria, Mama- Vairastak, Contact : 612, Sector 6C, Avas Vikas Colony, Sikandra, Bodla, Agra-282007, Mob.: 9412372816, 9412315497 *(Sep.)*

★ **Vishal Jain** S/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 03.09.1991 (at 1:30 AM, Delhi), Height 5'-7", Education- MBA, M.Com., Occupation- Finance Analyst in Safexpress Pvt. Ltd., Gotra : Self- Aameshri, Mama- MaiMunda, Package 3.5 LPA, Contact : WZ-1194, Palam, Near Dwarka, Sector-7, New Delhi-110045, Mob.: 9810512673, 9810864505 *(Oct.)*

★ **Tarun Kumar Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 29.09.1992 (at 1:55 PM, Nowgaon, Distt. Alwar), Height 5'-7", Good Looking Fair, Education- B.Tec in ECE From Govt. Engineering College Ajmer, Occupation- Junior Associate in SBI Bank in Sasan Gir in Gujarat, Gotra : Self- Maimuda, Mama- Sangarwasiya, Contact : Near Mandi Chowk, Mubarikpur (Alwar), Mob.: 9982283492 *(Oct.)*

★ **Parag Jain** S/o Sh. Satish Kumar Jain, DoB 21.10.1995 (at 10:54 PM, Alwar), Height 5'-10", Education- B.Tech (CS), Working as a Probationary Officer in SBI, Kishangarh, Income 10 LPA, Gotra : Self- Badwasia, Mama- Athwarsia, Contact : 27/169, Naruka Colony, Alwar, Mob.: 7014560816, Email : satishjain912@gmail.com *(Oct.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 18.08.1990, Height 5'-10", Education- MBA Marketing & HR, Occupation- Canara Bank Housing Finance Agra, Income 35,000/- Per Month, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Contact : 9258065928, 9045216301 *(Oct.)*

★ **Gourav Jain** S/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 02.02.1995 (at 10:30 AM, Jodhpur), Height 5'-6", Complexion- Fair, Education BSc. (PCM), Working as Manager in Balaji Art & Craft Jodhpur, Income 3.50 LPA, Gotra : Self- Tijariya, Mama- Vaderiya, Contact : 8/B/120, Sec-8, Kudi Bhagtasni Housing Board, Jodhpur, Mob.: 9928919609, 8696872651, Email : jaingourav075@gmail.com *(Oct.)*

★ **Raunak Jain** S/o Sh. R.K. Jain, DoB 21.01.1991 (at 7:33 AM), Height 5'-8", Education- B.Tech in Computer Science, Occupation- Tech Lead in Tech Mahindra Pune, Gotra : Self- Dhati, Mama- Goyal Agrawal, Contact : 3B8, C.H.B. Jodhpur (Raj.), Mob.: 9828384341, 9587683776

(Whatsapp), Email : jainraunak21@gmail.com *(Oct.)*

- ★ **Nivesh Jain** S/o Sh. Ashok Jain, DoB 07.08.1995, Working in Punjab National Bank Alwar, Gotra : Self- Ambia, Mama- Mittal, Contact : 1/225, Kala Kua, Alwar, Mob.: 9413739054, 9413455347, 9950087666 *(Oct.)*
- ★ **Shubham Jain** S/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 28.10.1993 (at 11:50pm, Agra), Height 5'-8", Education- B.Tech (EEE Delhi), Occupation- Software Engineer, Income 17 LPA, Gotra : Self- Salawadiya, Mama- Chandpuriya, Contact : C-3, Kedar Nagar, Shahganj, Agra, Mob.: 9837020651, 8077417805, Email : delta_agra@rediffmail.com *(Oct.)*
- ★ **Palak Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 19.11.1991 (at 2:35 PM), Height 5'-7", Education- B.Com., MBA, Job- Process Analyst in Tata Consaltancy Service (TCS), Gurgaon, Package 4.20 LPA, Gotra : Self- Baderia, Mama- Barolia, Contact : H.No. 1724 , Sector-7, Avas Vikas Colony, Bodla, Agra-282007, Mob.: 9319179796, 9758010189 *(Oct.)*
- ★ **Deepesh Jain** S/o Sh. Kailash Chand Jain, DoB 02.06.1994 (at 11:40 PM, Kherli Alwar), Height- 5'-9", Education- B.Tech. CSE, Job- Software Development Engineer-2 at Amazon, Bangalore, Gotra : Self- Baderia, Mama- Chaudbambar, Contact : 262/196, Pratap Nagar, Sanaganer, Jaipur, Mob.: 9001896028, 7665841000 *(Oct.)*
- ★ **Aditya Palliwal** S/o Sh. Anil Kumar Palliwal, DoB 29.08.1990 (at 12:01 pm, Jaipur), Height 5'-11", Education- MBA in Finance - Glovsoin Institute of Business Management, Job- Working at E.N.Y. (MNC), Salary 8 LPA, Contact : 71, Narisingha Dutta Road, Merlin Leurel Garden, Barisha, Kolkata-700008 *(Oct.)*
- ★ **Saurabh Jain** S/o Sh. Bablee Jain, DoB 11.09.1990, Height- 5'-8", Education- BA from Rajasthan University, Job- Clerk in Private College, Gotra : Self- Saingervasiya, Mama- Chaudhary, Contact : Bich ka Para, Nadbai, Bharatpur-321602, Mob.: 8696853145, 9468912131, 9509862456, Email : saurabhnadbai@gmail.com *(Oct.)*
- ★ **Akash Palliwal (Sunny)** S/o Sh. Anil Kumar Palliwal, DoB 10.07.92, Height- 5'-8", Education- B.Tech. (Electrical Engg.), Occupation- Custom Inspector / G.S.T. [Ahmedabad (Gujrat)], Gotra : Self- Kotia, Mama- Nangesuria, Contact : Rewa Mill, Nahar Road, Gangapur City -322201, Mob.: 9983629729 *(Oct.)*
- ★ **Shubham Jain** S/o Late Sh. Rajesh Jain, DoB 13.07.1994 (at 1:40 AM, Beawar), Height- 5'-11", Education- MBA (Marketing & Finance), Occupation- District Marketing Officer, Barmer (J.K. Cement), Package- 6.38 LPA + Incentives, Gotra : Self- Januthrya, Mama- Badwasye, Contact : Smt. Babita Jain, H.No. 6, New Agrasen Colony, Delwara Road, Beawar-305901, Mob.: 9529397529 *(Oct.)*
- ★ **Ravi Jain** S/o Sh. Sheetal Chand Jain, DoB 18.12.1994 (at New Delhi), Height- 5'-10", Very Fair Complexion, Education- B.Com, Pursuing M.Com., Profession- Own Business, Income- Above Rs. 7,50,000/- per year, Gotra : Self- Choudhary, Mama- Chorbambhar, Contact : Band Road, Sangam Vihar, New Delhi-80, Mob.: 9818560038, 9211981214, Email : ravijain181294@gmail.com *(Oct.)*
- ★ **Shivang Jain** S/o Sh. Neeraj Kumar Jain, DoB 12.07.1992 (at 11:45 am, Agra), Height- 5'-3", Education- MCA, BCA, Job- Analyst at DBS Bank (Asia Hub 2), Hyderabad, Gotra : Janutharia, Contact : 28, Brij Vihar, Phase-3, Kamla Nagar, Agra-282005, Mob.: 9837116693, 9837649417, Email : shivangjain50@gmail.com *(Oct.)*
- ★ **Sumit Jain** S/o Sh. Lochan Das Jain, DoB 05.06.1991 (at 7:30 pm, Morena), Height- 5'-9", Education- BE (Mechanical), IET-DAVV Indore, Job- Auditor in CGDA (Ministry of Defance), Salary- 8 LPA, Gotra : Self- Baribar, Mama- Kashmiria, Contact : Gali No. 1, Durga Colony, Nainagarh Road, Morena-476001, Mob.: 8463022852, 8109522852, Email : jain.sumit9934@gmail.com *(Oct.)*
- ★ **Kulish Jain** (Manglik) S/o Sh. Arun Jain, DoB 20.06.1993 (at Gangapur City), Height- 168 cms., Education- MBA, Job- Private Sector, Income- 4 LPA, Gotra : Gindorabaksh, Contact : Tonk Bus Stand, Bazariya, Sawai Madhopur, Mob.: 9461456394, 9414415993, Email : jainkulish@gmail.com *(Oct.)*
- ★ **Jayeshu Jain** S/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 12.10.1995 (at 10:45 pm, Midhakur, Agra), Height- 5'-8", Education- B.Sc., Job- Business, Gotra : Self- Sarang, Mama- Jaipatiya, Contact : Main Market, Midhakur, Agra-283105, Mob.: 9059664932, 7983653357 *(Oct.)*

* * * * *

कहानी बड़ी सुहानी

विनम्रता

एक बार नदी ने समुद्र से बड़े ही गर्वीले शब्दों में कहा बताओ पानी के प्रचंड वेग से मैं तुम्हारे लिए क्या बहा कर लाऊं? तुम चाहो तो मैं पहाड़, मकान, पेड़, पशु, मानव आदि सभी को उखाड़ कर ला सकती हूं।

समुद्र समझ गया कि नदी को अहंकार आ गया है। उसने कहा, यदि मेरे लिए कुछ लाना ही चाहती हो तो थोड़ी सी घास उखाड़ कर ले आना। समुद्र की बात सुनकर नदी ने कहा, बस, इतनी सी बात! अभी आपकी सेवा में हाजिर कर देती हूं। नदी ने अपने पानी का प्रचंड प्रवाह घास उखाड़ने के लिए लगाया परंतु घास नहीं उखड़ी। नदी ने हार नहीं मानी और बार-बार प्रयास किया पर घास बार-बार पानी के वेग के सामने झुक जाती और उखड़ने से बच जाती। नदी को सफलता नहीं मिली। थकी हारी निराश नदी समुंद्र के पास पहुंची और अपना सिर झुका कर कहने लगी, मैं मकान, वृक्ष, पहाड़, पशु, मनुष्य आदि बहाकर ला सकती हूं परंतु घास उखाड़ कर नहीं ला सकी क्योंकि जब भी मैंने प्रचंड वेग से खास पर प्रहार किया उसने झुककर अपने आप को बचा लिया और मैं ऊपर से खाली हाथ निकल आई। नदी की बात सुनकर समुद्र ने मुस्कुराते हुए कहा, जो कठोर होते हैं वह आसानी से उखड़ जाते हैं लेकिन जिसने घास जैसी विनम्रता सीख ली हो उसे प्रचंड वेग भी नहीं अखाड़ सकता। समुद्र की बात सुनकर नदी का घमंड भी चूर चूर हो गया।

विनम्रता अर्थात् जिसमें लचीलापन है, जो आसानी से मुड़ जाता है, वह टूटता नहीं। नम्रता में जीने की कला है, शौर्य की पराकाष्ठा है। नम्रता में सर्व का सम्मान संचित है। नम्रता हर सफल व्यक्ति का गहना है। नम्रता ही बड़प्पन है। दुनिया में बड़ा होना है तो नम्रता को अपनाना चाहिए। संसार को विनम्रता से जीत सकते हैं। ऊंची से ऊंची मंजिल हासिल कर लेने के बाद भी अहंकार से दूर रहकर विनम्र बने रहना चाहिए।

विनम्रता के अभाव में व्यक्ति पद में बड़ा होने पर भी घमंड का ऐसा पुतला बनकर रह जाता है जो किसी के भी सम्मान का पात्र नहीं बन पाता। स्थान कोई भी हो, विनम्र व्यक्ति हर जगह सम्मान हासिल करता है। जहां विरोध हो जहां प्रतिरोध और बल से काम नहीं चल सकता। विनम्रता से ही समस्याओं का हल संभव है। विनम्रता के बिना सच्चा स्नेह नहीं पाया जा सकता। जो व्यक्ति अहंकार और वाणी की कठोरता से बचकर रहता है वही सर्वप्रिय बन जाता है..!!

मैले कपड़े

एक दिन की बात है एक मास्टरजी अपने एक अनुयायी के साथ प्रातःकाल सैर कर रहे थे कि अचानक ही एक व्यक्ति उनके पास आया और उन्हें भला-बुरा कहने लगा। उसने पहले मास्टर के लिए बहुत से अपशब्द कहे, पर बावजूद इसके मास्टर मुस्कुराते हुए चलते रहे। मास्टर को ऐसा करता देख वह व्यक्ति और भी क्रोधित हो गया और उनके पूर्वजों तक को अपमानित करने लगा। पर इसके बावजूद मास्टर मुस्कुराते हुए आगे बढ़ते रहे। मास्टर पर अपनी बातों का कोई असर ना होते हुए देख अंततः वह व्यक्ति निराश हो गया और उनके रास्ते से हट गया।

उस व्यक्ति के जाते ही अनुयायी ने आश्चर्य से पुछा, 'मास्टरजी आपने भला उस दुष्ट की बातों का जवाब क्यों नहीं दिया, और तो और आप मुस्कुराते रहे, क्या आपको उसकी बातों से कोई कष्ट नहीं पहुंचा?'

मास्टरजी कुछ नहीं बोले और उसे अपने पीछे आने का इशारा किया।

कुछ देर चलने के बाद वे मास्टरजी के कक्ष तक पहुँच गए।

मास्टरजी बोले, 'तुम यहीं रुको मैं अंदर से अभी आया।'

मास्टरजी कुछ देर बाद एक मैले कपड़े को लेकर बाहर आये और उसे अनुयायी को थमाते हुए बोले, 'लो अपने कपड़े उतारकर इन्हें धारण कर लो?'

कपड़ों से अजीब सी दुर्गन्ध आ रही थी और अनुयायी ने उन्हें हाथ में लेते ही दूर फेंक दिया।

मास्टरजी बोले, 'क्या हुआ तुम इन मैले कपड़ों को नहीं ग्रहण कर सकते ना? ठीक इसी तरह मैं भी उस व्यक्ति द्वारा फेंके हुए अपशब्दों को नहीं ग्रहण कर सकता।

इतना याद रखो कि यदि तुम किसी के बिना मतलब भला-बुरा कहने पर स्वयं भी क्रोधित हो जाते हो तो इसका अर्थ है कि तुम अपने साफ़-सुथरे वस्त्रों की जगह उसके फेंके फटे-पुराने मैले कपड़ों को धारण कर रहे हो!

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

विमल चन्द जैन (रेता वाले)

ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9690441107 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers
★ Shree Vimal Silica Traders
★ S.B. Jain Mineral Enterprises

BIMAL CHAND JAIN
(Reta Wala)

ANKIT JAIN

AKHIL JAIN

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क :
Bimal Jain - 09837253305
Ankit Jain - 09837478564
Akhil Jain - 09690441107

RNI NO. RAJHIN/2012/47438

Postal Registration No. JAIPUR CITY/434/2019-21

RERA Registration No.
RAJ/P/2019/1054
www.rera.rajasthan.gov.in

Pearl
FORTUNE
3 BHK Boutique Apartments

Your perfect home is now
at a landmark address.

Pearl Build Trust & Loyalty

16 Smart Home | 3 BHK | Vastu Friendly | Site : B-138, Mangal Marg, Bapu Nagar, Jaipur

Pearl Build Trust & Loyalty

Pearl India Buildhome (P) Ltd.
"Pearl Suryavanshi", 401, A-5, Sardar Patel Marg,
C-Scheme, jaipur - 302001. INDIA, Ph.: +91 141 4014044

Dr. Raj Kumar Jain +91 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain +91 9829010092

2 Decades of Excellence | **3600** Villas + Plots | More than **500** Apartments | **22** 'Pearl' Tower | **6** Townships

If Undelievered, please return to :
श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे,
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 (राज.)

पत्रिका स्वामी- अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।